प्रारंभिक शिक्षा में डिप्लोमा
(डी.एल.एड.)

पाठ्यक्रम-503
प्रारम्भिक कक्षाओं में भाषा सीखना/सीखाना

ब्लॉक-2
भाषा अधिगम संबंधित कौशल

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
A 24/25, सांस्थानिक क्षेत्र, सैक्टर-62 नौएडा,
गौतम बुद्ध नगर उत्तर प्रदेश-201309
वैबसाइट : www.nios.ac.in

श्रेय अंक (4=3+1)

खण्ड	इकाई	इकाई का नाम	सैद्धान्तिक अध्ययन अवधि (घंटों में)		प्रयोगात्मक अध्ययन
			विषय-वस्तु	क्रियाकलाप	
खण्ड-1 भाषा की समझ	**इकाई 1**	भाषा क्या है?	4	2	भारत की संरचना एवं बच्चों के वाक्यों एवं बहुवचनों का विश्लेषण
	इकाई 2	भारतीय भाषाएँ	4	2	त्रिभाषा सूत्र को लागू करना
	इकाई 3	भाषा-अधिगम एवं भाषा-शिक्षण	4	3	• संचयी संरचना उपागम, अनुवाद एवं व्याकरण पर समूह कार्य • विभिन्न वर्गों से तीन पाठ्य वस्तुओं का विश्लेषण • भाषा शिक्षण का उपयोग साहित्यिक गतिविधियों की सार्थकता
खण्ड-2 भाषा अधिगम संबंधित कौशल	**इकाई 4**	सुनना व बोलना	5	3	• विभिन्न तकनीकों, सहायकों का उपयोग • कक्षा में श्रुतलेख का उपयोग
	इकाई 5	पढ़ना	5	3	शिक्षण-अधिगम शब्दकोश निर्माण में विभिन्न पठन उपागमों का उपयोग
	इकाई 6	लिखना	5	3	• डिस्लैक्सिया के संर्कतक के रूप में हस्तलिपि का अध्ययन • लेखन कौशल शिक्षण के लिए विभिन्न प्रविधियों का उपयोग
खण्ड-3 भाषा सीखना	**इकाई 7**	साहित्य एवं भाषा	5	2	इकाई योजनाओं का विकास
	इकाई 8	भाषा की कक्षा में शिक्षण योजना	6	4	विभिन्न उपागमों में पाठ योजना प्रत्यय चित्रण की तैयारी
	इकाई 9	शैक्षिक सामग्री: कुछ नये आयाम	5	4	विभिन्न श्रव्य-दृश्य सामग्री का निर्माण
	इकाई 10	मूल्यांकन और आकलन	4	2	भाषा आकलन उपकरण
		शिक्षण	15		
		योग	62	28	30
		कुल योग = 62+ 28+ 30 = 120 घण्टे			

ब्लॉक-2

भाषा अधिगम संबंधित कौशल

इकाई 4 : सुनना व बोलना

इकाई 5 : पढ़ना

इकाई 6 : लिखना

खंड प्रस्तावना

चौथी इकाई में सुनने और बोलने के कौशलों पर विस्तार से चर्चा की गई है।

पाँचवीं इकाई पढ़ने के और **छठी इकाई** लिखने के कौशलों से संबंधित है। इन सबमें एक मुख्य बिन्दु यह है कि बच्ची द्वारा गलतियाँ करना, सीखने की प्रक्रिया का एक स्वाभाविक हिस्सा है और गलतियाँ बच्ची के ज्ञान की द्योतक होती हैं ना कि उसके अज्ञान की। यह समझना भी जरूरी है कि हमारा ध्यान शुद्धता पर होना चाहिए या बेझिझक अभिव्यक्ति पर।

विषय सूची

क्रम. सं.	*पाठ का नाम*	*पृष्ठ संख्या*
1.	इकाई 4 : सुनना व बोलना	1
2.	इकाई 5 : पढ़ना	25
3.	इकाई 6 : लिखना	45

टिप्पणी

इकाई 4 सुनना व बोलना

संरचना

4.0 परिचय

4.1 अधिगम उद्देश्य

4.2 सुनना और बोलना

4.2.1 सुनना माने क्या?

4.2.2 बोलना माने क्या?

4.3 कक्षा में बातचीत की जरूरत

4.4 कक्षा में सुनने बोलने के मौके कैसे उपलब्ध करवाएँ?

4.4.1 बालगीत/कविता

4.4.2 चित्र द्वारा

4.4.3 कहानी सुनाना

4.4.4 नाटक द्वारा

4.4.5 सहशैक्षणिक गतिविधियाँ

4.5 सटीकता या धारा प्रवाहिता

4.6 सारांश

4.7 संदर्भ ग्रंथ/कुछ उपयोगी पुस्तकें

4.8 अंत्य इकाई अभ्यास

4.0 परिचय

पिछली इकाइयों में हमने पढ़ा कि बच्चे अपने घरेलू परिवेश में एक से अधिक भाषाएँ सहजता से सीख लेते हैं। ऐसा इसलिए भी संभव हो पाता है क्योंकि उन्हें इन भाषाओं के सुनने–बोलने के भरपूर मौके मिलते हैं। यही बात उन भाषाओं के लिए भी लागू होती है जिन्हें बच्चों को स्कूल में सीखना होता है। यदि बच्चों को इनके प्रयोग के भी पर्याप्त मौके दिए जाएँ तो वे उन्हें भी सहजता से सीख सकते हैं।

हम सुनने और बोलने के कौशलों की बात करेंगे और ये समझने की कोशिश करेंगे कि सुनने–बोलने का अर्थ क्या है और ये बच्चों के भाषा सीखने में कैसे सहायक हैं? साथ ही

टिप्पणी

यह समझेंगे कि एक शिक्षक का भाषा सिखाने में इन कौशलों के प्रति क्या नज़रिया रहता है?

4.1 अधिगम उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- सुनने–बोलने का अर्थ समझ पाएँगे;
- भाषा सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में सुनने–बोलने की भूमिका का विष्लेशण कर पाएँगे;
- कक्षा में इन कौशलों के विकास के लिए किस–किस तरह की गतिविधियाँ की जा सकती हैं तथा इनमें शिक्षक की वांछनीय भूमिका एवं जिम्मेदारी को स्पश्टता से पहचान पाएँगे;
- बोलने की प्रक्रिया में शुद्धता व धारा प्रवाहिता का महत्त्व निर्धारित कर पाएँगे।

4.2 सुनना व बोलना

पहली बार स्कूल जाने वाले बच्चों को शुरुआती 2–3 महीनों तक सुनने–बोलने का बहुत अभ्यास करवाया जाता है। वह इस रूप में होता है कि शिक्षक बच्चों को कविताएँ, गीत, गिनती, वर्णमाला आदि बोलकर सुनाते हैं और बच्चे उसे अक्षरशः पुनः दोहराते हैं, शिक्षक की उनसे अपेक्षा रहती है कि वे उन्हें रटकर याद कर पाएँ। चाहे वे उसका मतलब ना समझ रहे हों तब भी उन्हें उसे तब तक लगातार दोहराते रहना होता है जब तक कि वे उसे पूरी तरह से रट ना लें। ऐसा करने के पीछे शिक्षकों की सोच यह रहती है कि बार–बार एक ही ध्वनि सुनने और बोलने से बच्चे उसे सीख जाते हैं और उन्हें याद हो जाता है। उनका दृढ़ विश्वास है कि बच्चा बगैर सुने, नए वाक्य और शब्द बोल ही नहीं सकता। यानी बच्चा पहले सुनता है और फिर बोलता है।

जबकि सुनना और बोलना साथ–साथ चलने वाली प्रक्रियाएँ हैं जैसे कि जब आप कुछ बोल रहे होते हैं तब खुद को सुन भी रहे होते हैं। कभी–कभी ऐसा भी होता है कि हम बिना बोले केवल सुन रहे होते हैं, लेकिन ऐसा उन स्थितियों में होता है जब हम टी.वी., रेडियो आदि से सूचनाएँ ग्रहण कर रहे होते हैं। परन्तु ये सूचनाएँ ग्रहण करना टेपरिकॉर्डर की तरह नहीं होता कि जो बोला गया उसे वैसा ही रिकॉर्ड कर लिया और वक्त आने पर उसे पुनः दोहरा दिया। हमारे सुनाने बोलने की प्रक्रिया इससे भिन्न है। इसका एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है 'समझना'। बिना कोई बात समझे हम किसी संवाद को आगे नहीं बढ़ा सकते हैं। एक उदाहरण से इसे समझते है।

जब हम टेलीफोन पर बात करते हैं तो सामने वाला जो कुछ बोलता है, उसे समझकर फिर

टिप्पणी

हम उसकी बात का जवाब देते हैं। क्योंकि सामने वाले की बात समझे बिना हम बातचीत को जारी ही नहीं रख सकते हैं।

इसलिए भाषा सीखने की प्रक्रिया में इन कौशलों को अलग–अलग करके नहीं देखा जा सकता, ये परस्पर आश्रित हैं और इनमें विचार एवं समझ की प्रक्रिया एक–दूसरे से गुँथी हुई है।

पाठगत प्रश्न

1. सुनने–बोलने की प्रक्रिया का महत्त्वपूर्ण हिस्सा क्या है?

   (क) सुनना (ख) बोलना

   (ग) समझना (घ) सूचना ग्रहण करना

2. सुनने–बोलने की प्रक्रिया और सूचना ग्रहण करने में क्या अंतर है?

   .....

   .....

   .....

3. आमतौर पर स्कूलों में शुरुआती स्तर पर बच्चों को सुनने–बोलने के लिए किस तरह के मौके दिए जाते हैं? क्या ये मौके पर्याप्त होते हैं? अपना मत दीजिए।

   .....

   .....

   .....

4. आपका मित्र आज आकाशवाणी का समाचार प्रभात नहीं सुन पाया है। आपको समाचार सुनकर बताने के लिए कह गया है। आप उसे क्या–क्या बताएँगे? इसके लिए आपको क्या–क्या करना पड़ेगा?

   .....

   .....

   .....

4.2.1 सुनना माने क्या?

हम अपने आसपास कई तरह की आवाजों को सुनते हैं। उनमें इंसानों, मशीनों, जानवरों आदि की आवाजें शामिल हैं पर क्या हम उन सबको सही मायनों में सुन पाते हैं? जैसे–हम

चलती हुई मशीन की ध्वनि सुनते हैं, पर क्या इस तरह से सुनने का कोई अर्थ है?

सुनना काफी अलग तरह की प्रक्रिया है। बातचीत करते समय सुनने वाले को उसका अर्थ उसी समय समझना होता है। जब हम किसी संवाद को सुनते हैं तो उसके अर्थ को हम हमेशा एक ही तरीके से नहीं समझ रहे होते हैं। हम अर्थ को दो तरह से समझते हैं।

पहला, शब्दों के आधार पर संवाद को समझाना। यह प्रक्रिया डिकोडिंग के रूप में होती है जिसमें केवल सुनी जाने वाली ध्वनियों, शब्दों, उपवाक्यों, वाक्यों और पाठ के आधार पर ही अर्थ को समझा जाता है। सुनने वाले को वाक्य में इस्तेमाल होने वाले शब्द का अर्थ और वाक्य में शब्दों के एक विशेष क्रम (पैटर्न) का पता होना चाहिए। हम इसे एक उदाहरण द्वारा समझ सकते हैं जैसे– यदि कोई मित्र हमें शाम के खाने के लिए अपने घर पर बुलाता है और आज से पहले हमने कभी उसका घर नहीं देखा और मित्र को फोन करके पता पूछने पर वह बताता है कि–

''सिटी सेंटर से, दाएँ की तीसरी गली में मुड़कर, सीधे चलिए और फिर बायीं ओर, बावर्ची होटल वाली गली में, तीसरा मकान मेरा है।''

तो इसका मकान खोजते हुए हम शब्दशः उसके संवाद को ध्यान में रखते हुए आगे बढ़ते हैं और उसके हर निर्देश का अनुसरण करते हुए उसके घर तक पहुँच जाते हैं।

इस प्रक्रिया में हमारा पूरा ध्यान उसके संवाद पर होता है और हमारा अनुभव हमें बताता है कि हमें इसके क्रम को नहीं तोड़ना है। इसमें ध्वनि को छोटे–छोटे टुकड़ों में बाँटकर (जैसे– सिटी सेंटर से दाएँ, तीसरी गली, सीधा चलना, बायीं तरफ, बावर्ची होटल वाली गली, तीसरा मकान) उनकी डिकोडिंग करते हैं और संवाद को समझते हैं। यहाँ पूरे संवाद में से महत्त्व के शब्दों को पहचानना और उनके टुकड़े करने की योग्यता महत्त्वपूर्ण है जो निरन्तर अभ्यास से आती है।

इस प्रकार हम शब्दों के द्वारा अर्थ समझते हैं। कथन को इस तरीके से समझने के लिए श्रोता को समृद्ध शब्दावली एवं वाक्य संरचना का अच्छा–खासा अभ्यास होना चाहिए। इस प्रक्रिया का निरन्तर अभ्यास, निम्न क्षमताएँ पाने में मदद करता है।

- कहे गए कथन को शब्दशः सुनना।
- शब्द और वाक्य–विभाजन को पहचानना।
- मूल शब्दों (key words) को पहचानना।
- वाक्य और मूल शब्दों के व्याकरणिक संबंधों को पहचानना।
- शब्द एवं वाक्य के लिए बलाघात एवं विराम का प्रयोग करना।

दूसरा, पूर्वज्ञान के आधार पर कथन को समझना। जहाँ शब्द के आधार पर अर्थ ग्रहण की प्रक्रिया शब्द से अर्थ की ओर जाती है वहीं पूर्वज्ञान से अर्थ ग्रहण की प्रक्रिया अर्थ से

टिप्पणी

संरचना की ओर जाती है। इसके लिए पूर्वज्ञान की जरूरत है चाहे यह पूर्वज्ञान किसी संवाद या मुद्दे से सम्बन्धित हो, परिस्थितिजन्य हो, संदर्भ का हो या किन्हीं घटनाओं के 'स्कीमा' के रूप में हो। उदाहरण के लिए–

मैंने समाचार में सुना कि 'कल रात चीन में भीषण भूकम्प आया'।

'भूकम्प' शब्द को पहचानते हुए हमारे दिमाग में कुछ प्रश्नों एवं उत्तरों के सेट बनते हैं, जैसे–

- भूकम्प चीन में कहाँ आया?
- यह कितना भीषण था?
- कितने लोग मर गए या घायल हुए?
- क्या–क्या राहत कार्य चल रहे हैं?

ये प्रश्न हमें उस कथन को समझने की ओर ले जाते हैं। इस प्रक्रिया में न्यूनतम सूचना द्वारा अर्थ ग्रहण होता है साथ ही इसमें पूर्वज्ञान की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। जैसे– इस कथन में न्यूनतम सूचना, 'कल रात चीन में भीषण भूकम्प आया' है और इसमें पूर्वज्ञान यह हो सकता है कि हमने पहले भी भूकम्प के बारे में देखा, सुना एवं पढ़ा हो, जिसमें वो सारी सूचनाएँ निहित हों, जिन्हें यहाँ प्रश्नों के रूप में उठाया गया है। अगर श्रोता इस प्रक्रिया से अर्थ ग्रहण करने में असमर्थ है तो इसका अर्थ है कि या तो वह संवाद अधूरा है या फिर वहाँ उसका पूर्वज्ञान सीमित है। इस प्रक्रिया के अभ्यास से निम्न क्षमताएँ हासिल करने में मदद मिलती है–

- मूल शब्दों के आधार पर संवाद की समझ बनाना।
- शीर्षक या स्थिति से सम्बन्धित प्रश्न कर पाना।
- कारण एवं प्रभाव का अनुमान लगाना।
- किसी परिस्थिति के अनकहे विवरण का अनुमान लगाना।

सुनने–सुनाने के दौरान ये दोनों प्रक्रियाएँ साथ–साथ चलती हैं। दोनों ही प्रक्रियाओं में संवाद को समझने के लिए संदर्भ समान महत्त्व रखता है। कौनसी परिस्थिति में कौनसी प्रक्रिया ज्यादा उपयुक्त होगी, इसका दारोमदार सुनने वाले का शीर्षक एवं संवाद से परिचय, दी गई सूचना की गहराई, सूचना का प्रकार एवं सुनने वाले के उद्देश्य पर निर्भर करता है।

पाठगत प्रश्न

1. हम अर्थ को कितने तरह से समझते हैं?

   (क) एक (ख) दो

   (ग) तीन (घ) चार

2. शब्दों के आधार पर समझने की प्रक्रिया में संवाद को किस प्रकार से समझा जाता है? उदाहरण देकर विश्लेषण कीजिए।

   .....

   .....

   .....

3. 'शब्दों के आधार पर' एवं 'पूर्वज्ञान के आधार पर' अर्थ ग्रहण की प्रक्रियाओं में क्या फ़र्क है?

   .....

   .....

   .....

4. रवि ने कहा कि ''मैं दंत चिकित्सक के पास जा रहा हूँ।'' इस कथन को सुनकर हमारे दिमाग में किन–किन प्रश्नों और उत्तरों के सेट बनेंगे?

   .....

   .....

   .....

4.2.2 बोलना माने क्या?

बोलने से तात्पर्य सिर्फ ध्वनियों, शब्दों या वाक्यों का उच्चारण मात्र नहीं है। जीन एचिसन ने अपनी पुस्तक 'द आर्टिकुलेट मैमल्स' में इंसानों की भाषाई समझ के बारे में काफी विस्तार से बात की है। उनके अनुसार बोलते समय हम कई तरह की प्रक्रियाएँ एक साथ कर रहे होते हैं। जैसे– बोलने से पहले हम अपने दिमाग में यह योजना बनाते हुए चलते हैं कि क्या बात की जाए कि सुनने वाला हमारी कही गई बात को सही अर्थों में समझ सके। साथ ही बोलते समय हम ये भी पहले तय कर लेते हैं कि किसके सामने हमें क्या कहना है या एक ही बात जो हम अपने दोस्त को कहेंगे और वही बात अगर हम अपने दादाजी से कहेंगे तो हमारे बोलने के तरीके में और शब्दों के चुनाव में क्या फ़र्क होगा। जैसे–दादाजी से बात करते समय आप आदरसूचक शब्दों का प्रयोग करेंगे। दोनों ही तरह

की स्थिति में आप बोलने से पूर्व ही अपने दिमाग में यह तय कर लेते हैं कि आपको क्या कहना है, सारी योजना पहले ही बन जाती है। आगे कौनसे शब्द बोलने हैं तथा हमारा वाक्य (शब्द–वाक्य–रचना) किस प्रकार का होगा, इस पर विचार भी कर रहे होते हैं। इसे एक उदाहरण द्वारा समझते हैं–

'मैं आज घर देर से जाऊँगा',

'माँ नाराज होंगी' और

'मुझे घर से बाहर रहना पड़ेगा'

इन तीनों वाक्यों की बनावट सरल है। यदि इन वाक्यों को इस तरह से बोला जाए तो ठीक से समझ में आ रहे हैं और इनको बोलना भी आसान है। लेकिन अगर इन वाक्यों को एक दूसरे पर निर्भर कर दें तो बोलते समय योजना बनाने वाली प्रक्रिया को बारीकी से देख पाएँगे। जैसे–

'यदि मैं आज भी घर देर से गया तो माँ नाराज़ हो जाएँगी और या तो मुझे घर से बाहर रहना पड़ेगा या मैं किसी दोस्त के घर चला जाऊँगा'।

उपर्युक्त वाक्य में 'तो', 'यदि' पर आश्रित है। इसी तरह 'या' के साथ एक और 'या' का आना भी जरूरी है। साथ ही माँ के संदर्भ में 'जाएँगी' और अपने सन्दर्भ में 'जाऊँगा' होना ही पड़ेगा। स्पष्टतः यह पूरा वाक्य इसकी हू–ब–हू ध्वनि और लक्षणों के साथ बोलने से पहले ही हमारे दिमाग में बन चुका होता है और यह एक योजनाबद्ध क्रम में ही बनता है। (जीन एचिसन द्वारा 'द आर्टिकुलेट मैमल्स' के अनुवाद पर आधारित)

इस उदाहरण से स्पष्ट होता है कि हमें बातचीत करते समय योजना बनाते रहना और बोलते रहना जरूरी है। बोलने के दौरान ये प्रक्रियाएँ इतनी तेजी से होती हैं कि हमें इनका आभास तक नहीं होता। घरेलू भाषा के संदर्भ में यह बात ज्यादा प्रासंगिक है। जबकि दूसरी भाषा सीखने के दौरान ये प्रक्रियाएँ काफी नजदीक से देखी जा सकती हैं।

बोलने में विचारों और भावों के अनुकूल सही शब्दों का चयन एवं सही व्याकरणिक संरचना का होना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। व्याकरणिक संरचना से मतलब है कि हिन्दी भाषा में वाक्य की रचना कर्ता + कर्म + क्रिया से होती है, बोलने से पहले हमारे दिमाग में योजना बनाते समय यह संरचना सही–सही बनती है, इसमें कहीं कोई गड़बड़ी नहीं होती है।

इस पूरी प्रक्रिया में हाव–भाव एवं विचारों का भी महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। बोलते समय ध्वनि का उतार–चढ़ाव, विराम एवं लय भी अर्थ–बोध में महत्त्व रखती है। बोलने में विराम की क्या भूमिका है इसे हम एक उदाहरण द्वारा समझने की कोशिश करेंगे। जैसे–

'पकड़ो मत जाने दो'

इस वाक्य को बोलते हुए यदि 'पकड़ो' के बाद एक क्षण का विराम दिया जाए तो इसका अर्थ होता है कि कहीं जाने की मनाही का आदेश दिया जा रहा है परन्तु यदि यही विराम

टिप्पणी

'पकड़ो मत' के बाद दिया जाए तो वाक्य का जो अर्थ निकलता है वह पहले वाले अर्थ से एकदम उलटा होता है। अतः बोलते समय विराम कहाँ दिया जाए, इसकी समझ होना जरूरी है और यह समझ निरन्तर अभ्यास से ही विकसित होती है। इसी के साथ बोलते समय किसी शब्द पर ज़ोर देना या अलग लय के साथ बोलना भी वाक्य के अर्थ को प्रभावित करता है जैसे–

'ये स्कूल है'।

इस वाक्य को बोलते समय यदि हम अलग–अलग शब्दों पर ज़ोर दें या फिर अलग लय के साथ बोलें तो इससे वाक्य का अर्थ बदल जाता है। यह वाक्य लय बदलते ही व्यंग्यात्मक, प्रश्नात्मक या विस्मयात्मक वाक्य का अर्थ दे सकता है। इसी के साथ बोलते वक्त अमौखिक संकेतों (इशारों एवं हाव–भाव) का प्रयोग भी अर्थ को प्रभावित करता है।

पाठगत प्रश्न

1. हिन्दी भाशा में वाक्य की संरचना कैसी होती है?

   (क) कर्त्ता–क्रिया–कर्म (ख) कर्त्ता–कर्म–क्रिया

   (ग) क्रिया–कर्म– कर्त्ता (घ) कुछ कह नहीं सकते

2. अपने भाव–विचार को स्पश्ट करने के लिए बोलते समय हम किन–किन चीज़ों का सहारा लेते हैं?

   .....

   .....

   .....

3. अपने आसपास के 3–4 वर्ष के बच्चों द्वारा बोले जाने वाले 10 वाक्यों को लिखिए और विष्लेशण करके लिखिए कि भाषा के नियम की दृष्टि से वह बच्चा क्या–क्या जानता है।

   .....

   .....

   .....

4. किसी अहिन्दी भाषी व्यक्ति द्वारा बोले जाने वाले पाँच वाक्यों की सूची बनाइए। वाक्यों का विष्लेशण करके बताइए कि उसे हिन्दी बोलने में कहाँ–कहाँ दिक्कतें आ रही हैं?

   .....

   .....

   .....

टिप्पणी

4.3 कक्षा में बातचीत की जरूरत

बोलना और सुनना भाषा सीखने का पहला चरण है। यह बातचीत के रूप में सीधे–सीधे दिखाई देता है क्योंकि बातचीत के दौरान सुनना और बोलना दोनों प्रक्रियाएँ एक साथ चलती हैं।

प्रायः कक्षाओं में देखा जाता है कि शिक्षक बोलते हैं और बच्चे सुनते हैं या फिर शिक्षक कुछ प्रश्न करते हैं और बच्चे केवल उनका उत्तर देते हैं। परन्तु हम इसे बातचीत नहीं कह सकते क्योंकि बातचीत तो वह होती है जिसमें बच्चे आपस में या शिक्षक से बिना किसी दबाव के अपने विचारों को व्यक्त कर पाएँ। शिक्षक सोचते हैं कि बातचीत करने से कक्षा की शांति भंग होती है और सीखने में परेशानी आती है। बातचीत के प्रति शिक्षकों के इसी रवैये की वजह से आज तक हम बच्चों के सीखने में बातचीत के महत्त्व को नहीं समझ पाए हैं।

प्राथमिक स्तर पर बच्चे अपने घर की भाषा में सरलता से बातचीत करते व समझते हैं। क्योंकि वे अब तक उसी का प्रयोग करते आए हैं और स्कूल में आते ही एक नयी भाषा से उनका सामना होता है। समस्या तब आती है जब उन्हें स्कूल की भाषा सीखने और प्रयोग करने के लिए बाध्य किया जाता है। वास्तव में कक्षा में दोनों ही भाषाओं को जगह देने की जरूरत है और इनके बीच की दूरी को कम करने का एकमात्र तरीका है कि बच्चों को ज्यादा से ज्यादा बातचीत के मौके दिए जाएँ। इन प्रारम्भिक अवसरों में बच्चों की भाषा को उसी रूप में अपनाना चाहिए ताकि इससे वे अपने परिवेश के प्रति सम्मान एवं खुद में आत्मविश्वास महसूस कर पाएँ। यह प्रोत्साहन नई भाषा के ज्ञान को अर्जित करने और बच्चों के उत्साह को बढ़ाने में मददगार साबित होता है।

बच्चे कभी भी निरुद्देश्य बातचीत नहीं कर रहे होते हैं। इस बात को इन दो बच्चों के बीच हो रहे स्वाभाविक संवाद को पढ़कर समझा जा सकता है–

यहाँ सीखने की कई संभावनाएँ बच्चों को बातचीत के जरिए उपलब्ध हुई हैं। आइए, इसका विश्लेषण करके देखते हैं। जैसे– यहाँ लड़के की बात सुनकर लड़की को पुनः इस बात को याद करने का मौका मिला कि बहन जी पहले भी अँगूठी पहनती थीं। साथ ही बच्चे नई–पुरानी और छोटी–पतली में भी फ़र्क कर पा रहे हैं।

बातचीत के इन उपयोगों के प्रति सचेत होने के लिए जरूरी है कि हम बच्चों की बात सुनने की आदत डालें जो कि अक्सर हम बड़े नहीं करते हैं। किसी भी आम बातचीत में मस्त बच्चे अनायास ही अवलोकन, तुलना के साथ–साथ कई बार कल्पना व भविष्यवाणी भी करते हैं साथ ही अपने पक्ष को मजबूत करते हुए तर्क भी देते नजर आते हैं। हमें बातचीत में बच्चों के लिए सीखने की संभावनाओं को पहचानना होगा।

पाठगत प्रश्न

1. बातचीत के दौरान कौन–कौनसी दो प्रक्रियाएँ साथ–साथ चलती हैं?

   (क) सुनना व देखना (ख) पढ़ना व सुनना

   (ग) सनना व बोलना (घ) सुनना व हँसना

2. कक्षा में बच्चों की बातचीत के प्रति शिक्षक क्या सोचते हैं?

   .....

   .....

   .....

3. बच्चों को बातचीत के पर्याप्त अवसर मिलें इसके लिए कक्षा में अध्यापक की किस प्रकार की भूमिका अपेक्षित है?

   .....

   .....

   .....

4. अपने आस–पास के किन्हीं 3–6 साल के बच्चों की बातचीत का अवलोकन कीजिए और अपने अनुभव लिखिए और विश्लेषण कीजिए कि उनकी बातचीत में ऊपर दी गई क्रियाओं में से कौन–कौन सी शामिल हैं?

   .....

   .....

   .....

टिप्पणी

4.4 कक्षा में सुनने–बोलने के मौके कैसे उपलब्ध करवाएँ

गर्मी की छुट्टियों के बाद स्कूल खुल चुके थे। बरसात हो जाने से आसपास के डबरों में पानी भरा हुआ था। इधर स्कूल में पढ़ाई भी शुरू हो चुकी थी। एक कक्षा में शिक्षक पढ़ा रहे थे। कक्षा में पीछे की तरफ बैठे दो बच्चे आपस में बातें कर रहे थे। शिक्षक का ध्यान अचानक उन दोनों की ओर गया। शिक्षक उन बच्चों के पास गए और बड़े प्यार से पूछा 'भई, क्या बात है, हमें भी बताओ। क्या बातें हो रही हैं? और कोई मजेदार बात हो तो अपने दूसरे दोस्तों को भी बताओ।'

कक्षा में दोनों बच्चे कुछ देर के लिए तो सकपका गए। वे चुप ही रहे। फिर से शिक्षक ने कहा– 'डरो मत, आखिर तुम क्या बात कर रहे थे?'

उनमें से एक बच्चा हिम्मत करके बोला– 'है ना, हम घर से आ रहे थे तो डबरे में मेंढक जोर–जोर से बोल रहे थे।'

शिक्षक ने हौसला बढ़ाते हुए कहा– 'अच्छा!', फिर क्या हुआ?

बच्चे– 'मेंढक डबरे के किनारे उछल रहे थे। मेंढक बड़े–बड़े थे।'

शिक्षक– 'तो फिर क्या हुआ?'

बच्चे– 'फिरकृ। फिर, हम पास में गए तो पानी में छलाँग दी।'

उन दोनों बच्चों का हौसला बढ़ चुका था। उनको यह भरोसा हो गया था कि वो जो बातें कर रहे थे इस वजह से उनको डाँट पड़ने वाली नहीं है बल्कि वो जो बातें कर रहे थे उसकी वजह से उनको शाबाशी मिल रही है।

उनमें से एक बच्चे ने शिक्षक से पूछा– 'मेंढक बरसात के बाद कहाँ चले जाते हैं?'

शिक्षक जो पढ़ा रहे थे उसको छोड़कर बच्चों की बात को आगे बढ़ाया– 'सभी ने मेंढक देखा है।' उस कक्षा में कोई भी बच्चा ऐसा नहीं था जिसने मेंढक नहीं देखा हो। शिक्षक के इस सवाल पर पूरी कक्षा "हाँ " की आवाज के साथ गूँज रही थी।

अब तो हर बच्चा मेंढक के बारे में कुछ न कुछ कहने को उतावला हुए जा रहा था।

एक बच्चा बोला– मेंढक बरसात में ही टर्र–टर्र करते हैं।

एक बच्चे ने कहा– 'जब मेरे घर के पिछवाड़े खुदाई हो रही थी तो अंदर से मेंढक निकले थे।'

एक ने कहा कि उसने मेंढक को कीड़े खाते हुए देखा है। कोई बता रहा था कि मेंढक बावड़ी की मुंडेर से छलाँग लगा लेते हैं।

कक्षा का माहौल अब मेंढकमय हो गया था। कुछ बच्चे मेंढक की आवाज में टर्र–टर्र कर रहे थे तो कुछ मेंढक की तरह उछल रहे थे।

शिक्षक बच्चों की बातों और क्रियाकलापों को गौर से सुन और देख रहे थे। हालाँकि शिक्षक बीच–बीच में बच्चों को चुप भी करा रहे थे।

शिक्षक ने सभी बच्चों से कहा– 'देखो, अब मेंढकों को ओर ध्यान से देखना और सोचना भी कि आखिर मेंढक बरसात के बाद कहाँ चले जाते हैं।'

अन्त में शिक्षक ने बच्चों को मेंढक पर 5 वाक्य लिखकर लाने को कहा।

मेंढक पर हुई इस बातचीत में शिक्षक ने सहज तरीके से मेंढक के आवास, खान–पान, रंग–रूप, आकार, स्वभाव पर बातचीत की और उसे अपने शिक्षण से जोड़ा। स्कूल में शिक्षक द्वारा बच्चों को इस तरह की बातचीत के मौके देने से वे धीरे–धीरे अपने अनुभवों से जुड़े भावों और विचारों को प्रकट करने में समर्थ हो जाएँगे। साथ ही वे विभिन्न विषयों में शामिल ज्ञान को गहराई से समझ सकेंगे। ऐसे मौके देने के लिए शिक्षकों को ज्यादा दूर जाने की जरूरत भी नहीं है वरन् स्कूल परिवेश में या स्कूल के आस–पास की जगहों जैसे– बगीचा, खेत, नाला, छोटी पुलिया, फूल, तितलियाँ, सड़क, मिट्टी, फाटक, घोंसले आदि उन तमाम चीजों को आसानी से ढूँढ़ा जा सकता है। जिनका नजदीक से अवलोकन कर बच्चे उनके बारे में बातचीत कर सकते हैं।

यहाँ शिक्षक ने बच्चों को अपनी बात कहने के भरपूर मौके देने के साथ–साथ बोलने के लिए प्रोत्साहित भी किया है। अगर शिक्षक बच्चों को प्रोत्साहित ना करते तो कक्षा में इतनी बढ़िया बातचीत नहीं हो पाती। इस तरह कक्षा को बच्चों के जीवन और अनुभवों से जोड़ने से सीखना सहज एवं स्वाभाविक हो जाता है।

पाठगत प्रश्न

1. बच्चों को बातचीत का मौका देने से क्या फायदा होगा?

   (क) वे अपने अनुभवों व विचारों को प्रकट करने में सक्षम होंगे

   (ख) शब्द सीखेंगे

   (ग) तुकबंदी करेंगे

   (घ) पढ़ना सीखेंगे

2. एक शिक्षक के लिए बच्चे को बोलने के मौके देना क्यों जरूरी होता है?

   .....

   .....

   .....

टिप्पणी

3. कक्षा में बच्चों की बातचीत को सीखने–सिखाने का जरिया आप कैसे बनाएँगे? एक उदाहरण द्वारा अपनी बात स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

4. आपके अनुसार शिक्षण के दौरान कक्षा का माहौल कैसा होना चाहिए?

.....

.....

.....

4.4.1 कविता/बालगीत सुनाना और गाना

गोल–गोल पानी
मम्मी मेरी रानी
पापा मेरे राजा
फल खाए ताजा।

पोशम्पा भई पोशम्पा
डाकुओं ने क्या किया
सौ रुपए की घड़ी चुराई
अब तो जेल में जाना पड़ेगा
सूखी रोटी खानी पड़ेगी
ठण्डा पानी पीना पड़ेगा।

हरा समन्दर, गोपी चन्दर
बोल मेरी मछली, कितना पानी
इतना पानी, इतना पानी।

हम अक्सर बच्चों को गली–मुहल्ले में अपने साथियों के साथ या अकेले ऐसे कई छोटे–छोटे बालगीत गाते देखते हैं। ये सब गाते समय ना उन्हें गलत गाने पर डाँट या सजा का डर रहता है और ना ही किसी के टोकने का डर। हर बच्चे को कविता/गीत की लय और शब्दावली आकर्षित करती है। कई बार तो वे गीतों के शब्दों को खींचतान कर ऊटपटाँग प्रयोग भी करते हैं और ऐसा करने में उन्हें बहुत ही मज़ा आता है। शब्दों से खेलना, बच्चों की रचनाशक्ति और ऊर्जा को बाहर लाने में अद्‌भुत भूमिका निभा सकता है। ये कविता इसका एक उदाहरण पेश करती है–

घर पीछे तलैया
घास की मड़ैया
पीपल की है छैया
छैया बैठी गैया।

अक्सर इस तरह के गीत गाते समय बच्चे उसमें कई बार अपनी मर्जी से कुछ शब्दों को जोड़ते–तोड़ते रहते हैं, परन्तु कविता की लय टूटती नहीं है। जैसे एक चार साल का बच्चा इस कविता में अपने शब्द जोड़कर गाता है–

घर पीछे गैया
मेरे साथ भैया
पीछे बैठी मैया
भैया मेरा रोया
रात नहीं सोया।

कविता अपने आपको अभिव्यक्त करने तथा अपने जीवन से जोड़ने का एक सशक्त माध्यम है। नियमित रूप से कविताएँ व गीत सुनकर बच्चे भाषा की बुनियादी संरचनाएँ ग्रहण कर लेते हैं। जैसे– कविता में आए नए शब्दों का अर्थ पकड़ लेते हैं, कविता के लय को बना बिगाड़ कर तुकबन्दी भी कर लेते हैं। साथ ही कविता बच्चों को अपने अनुभवों से भी जोड़ती है। अगर एक ही कविता को दो अलग–अलग बच्चों द्वारा पढ़ी जाएगी तो दोनों ही उस कविता का अर्थ अपने–अपने अनुभवों से जोड़ते हुए समझेंगे।

शिक्षकों के लिए यह सोचने वाली बात है कि कक्षा में कविता के साथ किस तरह से काम किया जाए जिससे बच्चों में रचनात्मकता का विकास हो तथा वे अपनी भावनाओं और अनुभवों को कविता व गीतों के द्वारा अभिव्यक्त कर सकें।

पाठगत प्रश्न

1. नियमित रूप से कविताएँ व गीत सुनकर बच्चे क्या ग्रहण करते हैं?

   (क) शब्द (ख) ध्वनि

   (ग) लय (घ) भाषा की बुनियादी संरचना

अगर पेड़ भी चलते होते

अगर पेड़ भी चलते होते
कितने मजे हमारे होते

बाँध तने में उनके रस्सी
जहाँ कहीं उनको ले जाते।

अगर कहीं पर धूप सतातीं
उनके नीचे झट सुस्ताते

जब कभी भी वर्षा होती
उनके नीचे हम छिप जाते।

भूख सताती अगर अचानक
तोड़ मधुर फल उनके खाते

आता कीचड़ बाढ़ कहीं तो
ऊपर उनके झट चढ़ जाते।

2. 'अगर पेड़ चलते होते' कविता कक्षा पाँच के बच्चों के साथ करवाइए और उसे आगे बढ़ाने को कहिए। बच्चों द्वारा जोड़ी गई पंक्तियों पर चर्चा कीजिए कि उन्होंने ये ही पंक्तियाँ क्यों लिखीं?

.....

.....

.....

3. यह कविता बच्चों को भाषा सीखने में क्या–क्या मौके देती है?

.....

.....

.....

4.4.2 चित्रों पर चर्चा करना

चित्र एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा हम कक्षा 1 से लेकर कक्षा 8 तक के बच्चों के साथ बातचीत एवं चर्चा की बहुत सारी संभावनाएँ खोज सकते हैं। छोटी कक्षाओं में तो बच्चों की चित्रों में बहुत ही रुचि होती है उन्हें चित्र देखने और बनाने में मजा आता है। किसी किताब में चित्र सबसे पहले बच्चों का ध्यान आकर्षित करते हैं। उनके साथ चित्रों पर सहज बातचीत करना आसान होता है। बच्चे चित्रों का बारीकी से अवलोकन भी करते हैं तथा उस पर खूब सारी बातचीत भी कर पाते हैं जिसका कि हम अंदाजा भी नहीं लगा सकते हैं।

टिप्पणी

कक्षा–3 के बच्चों के साथ जब इस चित्र पर बातचीत की गई तो बच्चे उसमें दिखाई देने वाली चीजों के नाम बताने के साथ–साथ अपने अनुभवों को अवलोकन से जोड़ते हुए कुछ तर्क दे पा रहे थे, पर हर किसी का अलग नजरिया था। इसके कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं।

(i) आदमी गाय ले जा रहा है/एक आदमी बैल बाँध रहा है/एक लड़का झोंपड़ी में जा रहा है।

(ii) एक लड़की पेड़ पर चढ़ रही थी एक लड़के ने उसको रोका कि पेड़ बहुत बड़ा है, तुम गिर जाओगी/लड़की पेड़ पर झूल रही है/पेड़ हिल रहे हैं/पहाड़ पर बहुत सारे पेड़ उग रहे हैं।

(iii) सुबह सूरज उग रहा है, सुबह पक्षी उड़ रहे हैं/सूरज निकल कर बाहर आ रहा है/शाम का समय है/सूरज डूब रहा है।

(iv) लुगाई घर जा रही है/औरत पानी ले जा रही है।

(v) दो बगुले उड़ रहे हैं।

उपर्युक्त वाक्य इस बात की ओर इशारा करते हैं कि बच्चे एक चित्र पर कई तरह से बातचीत करते हैं। चित्रों पर की गई बातचीत बच्चों की सृजनात्मकता और विश्लेषण क्षमता को बढ़ावा देती है। चाहे वे चित्र अखबारों में छपे हों, विज्ञापन के हों, कोई टिकट हो या कैलेण्डर के पीछे छपे हों। ये सभी चित्र उच्च प्राथमिक स्तर पर भी अलग–अलग तरीके से बातचीत के लिए उपयोग में लिए जा सकते हैं।

कक्षा में बच्चों के बीच बैठकर किसी तस्वीर को आराम से देखने का अवसर देना और अपनी बात कहने के लिए उन्हें स्वतंत्र छोड़ देना उनमें बेहिचक अभिव्यक्ति के विकास के लिए बहुत उपयोगी होता है। तस्वीर में जिन चीज़ों की तरफ बच्चों का ध्यान नहीं गया हो उसे शिक्षक प्रश्न पूछकर बच्चों के ध्यान में ला सकते हैं। इस तरह से बच्चे में बारीकी से अवलोकन करने की क्षमता विकसित की जा सकती है। तस्वीरों पर बात करते समय हमारे सवाल, बच्चों को अपने कौशलों को पैना करने का भरपूर मौका देते हैं। प्रश्न ऐसे होने चाहिए जो बच्चों को चीज़ों को ढूँढ़ने, उनके बारे में तर्क करने, कल्पना करने, भविष्यवाणी करने और चीजों और घटनाओं का अपने अनुभवों से संबंध बैठाने के लिए प्रेरित करें। जैसे उपर्युक्त चित्र पर आधारित ये प्रश्न बच्चों से सवाल पूछकर बातचीत को आगे बढ़ाने का

टिप्पणी

एक नमूना पेश करते हैं–

- पेड़ के नीचे क्या–क्या रखा है? (ढूँढ़ना)
- कुएँ के पास खड़ी बच्ची रो क्यों रही है? (तर्क करना)
- पनघट पर खड़ी औरतें क्या बातें कर रही होंगी? (कल्पना करना)
- औरतें घर जाकर क्या करेंगी? (भविष्यवाणी करना)
- क्या तुम कभी गाँव गए हो यदि हाँ तो तुमने वहाँ क्या–क्या देखा? (संबंध बनाना)

पाठगत प्रश्न

1. चित्र दिखाकर बच्चों से यह सवाल पूछा जाना कि पेड़ के नीचे क्या–क्या रखा है, उन्हें कौन–सा मौका देता है?

   (क) तर्क करने (ख) ढूँढ़ने

   (ग) कल्पना करने (घ) संबंध बनाने

2. इस चित्र पर बच्चों के साथ क्या–क्या बातचीत की जा सकती है? इसके लिए प्रश्न बनाइए और कक्षा–3 के बच्चों के साथ यह अभ्यास कीजिए और अपने अनुभवों को लिखिए।

.....

.....

.....

4.4.3 कहानी सुनना व सुनाना

कहानियाँ सुनना–सुनाना प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों को भाषा सीखने में बहुत मदद करता है। कहानी सुनना बच्चों के लिए रुचिकर होने के साथ–साथ उनकी सृजनात्मकता को भी

बढ़ाने वाला होता है। कई बार बच्चे सुनी हुई कहानी में मनचाहा बदलाव करके अपने मित्रों को सुनाते हैं। इसके द्वारा बच्चे न केवल शब्दों के अर्थ बल्कि विभिन्न घटनाओं को भी समझने लगते हैं और साथ ही यह बच्चों की कल्पनाशीलता को भी बढ़ाती है। कहानी इस मायने में भी महत्त्वपूर्ण कि यह बच्चों में अनुमान लगाने की क्षमता बढ़ाती है जैसे– जब कभी बच्चे कहानी सुन रहे होते हैं तो उनकी जिज्ञासा लगातार बनी रहती है कि आगे क्या होगा? वे अपने स्तर पर अनुमान लगाते रहते हैं और अगर कहानी उनकी सोच के अनुरूप आगे बढ़ती है तो वे ज्यादा आत्मविश्वासी होने लगते हैं और समय के साथ–साथ उनके अनुमान ज्यादा सटीक होते जाते हैं। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि कहानियाँ उनको भावी जीवन के लिए तैयार करने में भी मददगार होती हैं। जैसे– खरगोश–शेर वाली कहानी बच्चों को जीवन में आने वाली मुश्किलों का सामना करने हेतु मानसिक रूप से तैयार करती है। कहानियाँ सुनाते समय हम अपने जीवन के अनुभवों को भी उसमें शामिल करते चलते हैं। कई बार सुनाने वाले को उसमें से कोई बात ज्यादा महत्त्वपूर्ण लगती है तो वह उस हिस्से को बढ़ा–चढ़ाकर भी सुनाता है। ऐसा करते समय जीवन की घटनाओं, चरित्रों आदि को गढ़ना और उसके द्वारा सुनने वाले का ध्यान आकर्षित करना मुख्य उद्देश्य होता है। साथ ही सुनाने वाले का तरीका और हाव–भाव भी इसकी रोचकता पर प्रभाव डालते हैं। तथा जब कहानी में नए शब्दों का उपयोग होता है तो बच्चे हावभाव के साथ सुने गए शब्द से उसके अर्थ का अनुमान भी लगा लेते हैं। यह उनके शब्दकोश, सुनने–समझने और अनुमान लगाने की क्षमता में भी इज़ाफा करता है।

कहानी सुनाकर उस पर चर्चा करना थोड़ा मुश्किल काम है, परन्तु अगर शिक्षक की तैयारी हो कि चर्चा का उद्देश्य क्या है तो यह काफी आसान व सफल साधन बन सकता है। अधिकतर शिक्षकों को लगता है कि कहानी सुनाते ही उससे क्या शिक्षा मिलती है यह प्रश्न पूछना उनका अधिकार है जबकि बच्चों के साथ सार्थक संवाद की शुरुआत के लिए यह प्रश्न बिल्कुल भी ठीक नहीं हैं।

बच्चों को कहानी सुनाना जितना जरूरी है उतना ही जरूरी है उनसे कहानी सुनना। इससे बच्चों में अपने आपको अभिव्यक्त करने की क्षमता का विकास होता है। शिक्षक द्वारा सुनायी गई कहानी को दोहराने के बजाय बच्चों से उनकी मर्जी की कहानी सुनना ज्यादा फायदेमंद होता है। कहानी के व्यक्तित्व व चरित्र के बारे में प्रतिक्रिया देते समय वह अपने अनुभवों को भी उसमें शामिल करता है। प्रत्येक बच्चे को कक्षा में इस बात की स्वतन्त्रता देनी होगी कि वह कहानी के बारे में किसी भी तरह की बात करे, उसे कल्पना से बढ़ा–चढ़ा कर बताए।

पाठगत प्रश्न

1. बच्चों को कहानी सुनाने के साथ–साथ और क्या जरूरी है?

   (क) कहानी पढ़वाना (ख) कहानी याद करवाना

   (ग) हूबहू कहानी कहवाना (घ) कहानी सुनना

टिप्पणी

2. कक्षा I-II में बच्चों से बात करते समय पूछिए कि उन्हें कौनसी कहानियाँ सुनना पसंद है? बच्चे जो नाम बताएँ उन्हें बोर्ड पर लिखते जाइए। फिर इन्हीं नामों का प्रयोग करते हुए बच्चों को कहानी बनाने के लिए कहिए।

.....

.....

.....

3. कहानी बनाते समय हर बच्चा एक–एक वाक्य बोलता जाए आप उन वाक्यों को बोर्ड पर लिखते जाइए। अपने इस अनुभव के बारे में निम्न बिन्दुओं के अनुसार लिखिए–

(i) वे कौन–कौन से शब्द थे जिन पर कहानी बनवाई?

(ii) बच्चों द्वारा बनाई हुई कहानी क्या थी?

(iii) इस गतिविधि के दौरान आपकी क्या भूमिका रही?

(iv) गतिविधि करवाते समय आपको क्या–क्या समस्याएँ आईं?

4.4.4 नाटक द्वारा भाषाई विकास

बच्चों के लिए नाटक कोई नई चीज़ नहीं है। हम अक्सर बच्चों को कार्टून या फिल्म के पात्रों की नकल, अपने मम्मी–पापा, गुडिया की शादी, स्कूल–स्कूल आदि खेल खेलते देखते हैं। इस तरह से बच्चे खेल–खेल में किसी की नकल उतारना, किसी चीज़ को बढ़ा–चढ़ाकर बताना, बहाने बहाना जैसे कई नाटक करते रहते हैं। हर बच्चे में एक नाटकीय कौशल होता है लेकिन उन्हें कक्षा में इस कौशल का प्रयोग करने का अवसर नहीं मिलता। इसका कारण यह भी है कि नाटक–अभिनय जैसी गतिविधियों को स्कूलों में वार्षिक उत्सव या किसी विशेष अतिथि के सामने प्रदर्शन के लिए ही करवाया जाता है। इस स्थिति में भी संवाद शिक्षकों द्वारा लिखे होते हैं तथा प्रदर्शन के समय बच्चों में हमेशा ही गलती हो जाने का डर बना रहता है।

अभिनय को रोज़मर्रा की कक्षा–गतिविधि के रूप में इस्तेमाल करना इससे काफी अलग है। एक भाषाई गतिविधि के रूप में नाटक में दो बातों को शामिल करना जरूरी है– आजादी और आनन्द। नाटक को कक्षा में करवाने के लिए शिक्षक व बच्चों को कोई विशेष तैयारी की जरूरत नहीं होती। बस शिक्षक को इतना करना होता है कि वह बच्चों को स्वाभाविक रूप से अपने अनुभवों के बारे में बात करने के लिए प्रोत्साहित करे। प्राथमिक स्तर पर तो अभिनय के लिए किसी भी ऐसी घटना, कहानी या कार्टून को लिया जा सकता है जो बच्चे अपने आस–पास देखते हैं। जैसे– कोई जानवर, उसकी चाल, उसका रंग–रूप आदि। उच्च प्राथमिक स्तर पर शिक्षक बच्चों को इस बात के लिए प्रेरित करें कि वे छोटे–छोटे समूहों में खुद ही नाटक का विषय चुनें, खुद ही उसके संवाद लिखें एवं अभिनय करें। साथ ही बच्चों को पारम्परिक खेलों व लोककथाओं का अभिनय करने के लिए भी उत्साहित

करना चाहिए जिससे उनमें सृजनात्मकता के विकास के साथ–साथ अपने सांस्कृतिक वातावरण से भी जुड़ाव बढ़े।

4.4.5 सहशैक्षणिक गतिविधियाँ

कक्षा में बच्चों को सुनने–बोलने के मौके देने के लिए कुछ अन्य गतिविधियाँ भी करवायी जा सकती है। जो बच्चों को स्वयं सोच–विचारकर उसे अपने शब्दों में प्रस्तुत करने के मौके दे। जैसे– आशुभाषण, जिसमें बच्चों को दिए गए विषय पर तत्काल अपने विचार प्रस्तुत करने होते हैं। इसे रोचक बनाने के लिए ऐसे मनोरंजक विषय रखे जा सकते हैं जिससे बच्चे आनन्द लेते हुए बोल व सुन पाएँ जैसे– 'अगर मुझे अलादीन का चिराग मिल जाए', 'अगर मैं जादूगर होता', 'अगर मैं जोकर होता' आदि। दूसरी गतिविधि है, वाद–विवाद। इसमें बच्चों को किसी विषय के पक्ष या विपक्ष में अपने विचार प्रस्तुत करने होते हैं और विपक्षी विचारों के सामने ऐसे मजबूत तर्क रखने होते हैं जिससे वक्ता अपनी बात से ज्यादा से ज्यादा श्रोताओं को प्रभावित करे एवं उनको सहमत कर पाए। जैसे– 'उद्योग : वरदान या अभिशाप', 'फास्टफूड बनाम स्वास्थ्य'। इस तरह की गतिविधियाँ सभी कक्षा के बच्चों के साथ की जा सकती है। इनके द्वारा बच्चों को ऐसे अवसर मिलते हैं जिससे कि वे विचारों व बोलने में संबंध बैठा पाते हैं, उन्हें व्यवस्थित क्रम में जमाते हैं तथा तर्क के साथ अपने अनुभवों को जोड़ते हुए प्रभावी वक्ता एवं कुशल श्रोता बनते हैं।

इसके लिए अध्यापक को शुरू से ही बच्चों में धैर्यपूर्वक सुनने तथा दूसरों के विचारों का सम्मान करने की आदत विकसित करनी चाहिए।

पाठगत प्रश्न

1. बच्चो द्वारा खेल–खेल में किसी की नकल उतारना, किसी चीज़ को बढ़ा–चढ़ाकर कहना, बहाने बनाना यह दर्षाता है कि बच्चे में अमुक कौषल है–

   (क) बोलने का कौषल (ख) बातचीत करने का कौषल

   (ग) याद करने का कौषल (घ) नाटकीय कौषल

2. कोई रुचिकर विशय चुनकर कक्षा सात में आशुभाषण करवाइए और अपने अनुभव लिखिए।

   .....

   .....

   .....

4.5 शुद्धता या धारा प्रवाहिता

भाषाई प्रवीणता में शुद्धता व धारा प्रवाहिता दो तत्त्व शामिल हैं। बच्चे के भाषा सीखने में

टिप्पणी

इनकी क्या भूमिका है और शिक्षक होने के नाते बच्चों को भाषा सिखाते समय किस पर ध्यान देना ज्यादा महत्त्वपूर्ण है? इन सब बातों पर विचार करना जरूरी है। वह क्षमता जिसमें सीखने वाला सही व्याकरण एवं शब्दावली का उपयोग करते हुए वाक्य का सही–सही उच्चारण करता है 'शुद्धता' कहलाती है। प्राथमिक स्तर के बच्चे की शुद्धता का स्तर किसी वयस्क की शुद्धता के स्तर से भिन्न होता है। जैसा कि तीसरी इकाई में हम पढ़ चुके है कि बच्चा बोलने के हर स्तर पर गलतियाँ करते हुए भाषा सीखता है। बच्चे कि ये गलतियाँ उसके सीखने में तो सहायक होती ही हैं साथ ही वह गलतियाँ करते हुए भी भाषा के नियमों का पालन कर रहा होता है। जैसे एक तीन साल का बच्चा अपनी इच्छा जाहिर करने के लिए बोलता है–

मम्मी कार चाहिए है।

पानी चाहिए है।

बच्चा यह जानता है कि प्रत्येक वाक्य के अन्त में 'है' बोला जाता है और इसीलिए वह 'चाहिए' के बाद 'है' का प्रयोग करता है। भाषाई नियम की अगर बात की जाए तो 'चाहिए' अपने आप में एक सहायक क्रिया है जैसे– 'हमें रसगुल्ला खाना चाहिए' इस वाक्य में 'चाहिए' सहायक क्रिया है जबकि ऊपर के दोनों वाक्यों में यह एक मुख्य क्रिया है। और 'चाहिए' के साथ दूसरी सहायक क्रिया का प्रयोग 'था' के रूप में भूतकाल में ही किया जाता है। जैसे– 'मुझे वहाँ जाना चाहिए था'। भले ही बच्चा इस नियम से वाकिफ़ ना हो परन्तु वह इसका उपयोग करता है।

भाषाई प्रवीणता के सन्दर्भ में 'प्रवाहिता' का अर्थ उस क्षमता से है जिसके द्वारा बालक सहजता के साथ बोल, पढ़ और लिख कर अपने आपको अभिव्यक्त कर पाए। इसमें व्याकरणिक गलतियों की बजाय अर्थ एवं संदर्भ पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है।

आज भाषा शिक्षकों के सामने एक बहुत बड़ी दुविधा है कि वे बच्चों के साथ इन दोनों में से किस पर गम्भीरता से काम करें। हमारे सामने दोनों ही नज़रिये उपलब्ध है। परम्परावादी शिक्षक भाषा सीखने में शुद्धता को ज्यादा महत्त्व देते हैं। वे बच्चों पर व्याकरणिक दृष्टि से सही लिखने व बोलने पर ज़ोर देते हैं। इसके लिए वे बार–बार अनेक अभ्यासों द्वारा बच्चों की जाँच करते हैं। ज्यादातर कक्षाओं में बच्चों को अपनी गलतियाँ पहचानकर सुधार करने के मौके ना के बराबर दिए जाते हैं। परीक्षा केन्द्रित पद्धति इसी शुद्धतावादी विचार से प्रभावित है।

शिक्षकों का दूसरा वर्ग जिनका मानना है कि भाषा, संप्रेषण और अनुभवों की अभिव्यक्ति का साधन है। वे प्रवाहिता को ज्यादा महत्त्व देते हैं। वे व्याकरण के बजाय अर्थ एवं सन्दर्भ को समझने पर ज्यादा ध्यान देते हैं तथा इस पर ज़ोर देते हैं कि वे प्रवाह में बोलते हुए अपने विचारों को इस प्रकार अभिव्यक्त कर पाएँ कि सुनने वाला उसे सही अर्थ में ही समझे। इन शिक्षकों का मानना है कि बच्चे शुरू से ही जितना ज्यादा भाषा को प्रयोग में लाएँगे उनकी प्रवाहिता का स्तर बढ़ेगा।

टिप्पणी

वास्तव में दोनों नज़रिए देखने के बाद लगता है कि दोनों अपनी जगह ठीक हैं। समग्र रूप से भाषा सीखने के लिए बच्चों को दोनों में कुशलता हासिल करना जरूरी है। परन्तु प्रारम्भिक स्तर पर बच्चों को द्वितीय भाषा में ज्यादा अवसर नहीं मिलते हैं इसलिए हमें शुद्धता पर ज़ोर ना देकर उन्हें ज्यादा से ज्यादा बोलने के मौके उपलब्ध करवाते हुए प्रवाहिता पर ध्यान देना चाहिए। प्राथमिक स्तर के बाद हमें बच्चे की भाषा में शुद्धता एवं प्रवाहिता का संतुलन रखते हुए दोनों पर ध्यान देना जरूरी है। दसवीं तक आते–आते बच्चे प्रवाह से भाषा का प्रयोग करने लगते हैं तब हमें शुद्धता पर फोकस करना चाहिए क्योंकि सही समय पर सही तरीके से की गई मदद बच्चों के भाषाई विकास में बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

पाठगत प्रश्न

1. 'मुझे कार चाहिए' इस वाक्य में 'चाहिए' क्या है?

   (क) सहायक क्रिया   (ख) विषेशण

   (ग) संज्ञा   (घ) मुख्य क्रिया

2. शुद्धता और प्रवाहिता को अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

   ....

   ....

   ....

3. आपके मत में भाषा सीखने में शुद्धता और प्रवाहिता में से क्या ज्यादा मायने रखती है और क्यों?

   ....

   ....

   ....

4.6 सारांश

इस इकाई में हमने चर्चा की कि सुनने व बोलने का अर्थ केवल यांत्रिक रुप से सुनना या बोलना नहीं है बल्कि इसमें वैचारिक प्रक्रिया भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण है। साथ ही यह भी जाना कि बच्चे घर की भाषा में तो इन कौषलों में सहजता से प्रवीण हो जाते हैं परन्तु स्कूल की भाषा में ऐसी प्रवीणता हासिल करने के लिए विषेश प्रयासों की जरूरत होती है। इसमें सबसे महत्त्वपूर्ण, कक्षा में बातचीत के मौके देना जो कि सीखने का एक अनोखा साधन है और जिसका बच्चों के सामाजिक व्यवहार और व्यक्तित्व पर गहरा असर पड़ता है। साथ

टिप्पणी

ही इस बात पर भी चर्चा हुई कि कक्षा में इन मौकों को उपलब्ध करवाने में शिक्षक की महत्त्वपूर्ण भूमिका है और वह बच्चों को बेहिचक अभिव्यक्ति के लिए प्रोत्साहित कर सकता है। इस दौरान एक अन्य महत्त्वपूर्ण बात यह भी उभरकर आई कि बच्चों के भाषा सीखने में प्रवाहिता का स्थान शुद्धता से ऊपर है।

4.7 संदर्भ ग्रंथ/कुछ उपयोगी पुस्तकें

Agnihotri, R.K. and Bagchi, Tista. eds. (2007), *Construction of Knowledge*. Udaipur: Vidya Bhawan Society.

Agnihotri, R.K. (1999), *Bachchon ki Bhaashaa Sikhane ki Kshamataa, Bhag-1, 2 (Shaikshik Sandarbh). Bhopal: Eklavya*

Kumar, Krishna (1996), *Bachchon ki Bhaashaa Or Adhyaapak*. New Delhi: National Book Trust.

Richards, Jack C. (2008). *Teaching Listening and Speaking: From Theory to Practice*. New York: Cambridge University Press.

Chafe, Wallace (1985). *Differences between Speaking and Writing*. New York: Cambridge University Press.

4.8 अंत्य इकाई अभ्यास

1. कहानियाँ बच्चों की कौनसी क्षमताओं को विकसित करने में सहायक होती हैं?
2. बच्चों को कक्षा में बात करते ही टोक दिया जाता है, क्या यह रवैया आपको सही लगता है? अपना मत दीजिए।
3. आप एक ऐसी कहानी लिखिए जिस पर कक्षा में खूब सारी बातचीत हो सके। जिससे कि बच्चों के सुनने और बोलने की क्षमताओं का विकास हो सके।
4. बच्चों की बातचीत को प्रोत्साहित करने वाला कौनसा तरीका आपको ज्यादा पसंद है और क्यों? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।
5. सही मायनों में सुनने में क्या–क्या शामिल है?
6. कक्षा में जो बच्चे अक्सर बातचीत में भाग नहीं लेते, उन्हें बातचीत में शामिल करने के लिए आप किस तरह के उपाय करेंगे? कोई दो विस्तार से बताइए।
7. कक्षा 3 के बच्चों के लिए ऐसी चार लाइन की कविता ढूँढ़िए जिसे बच्चे अपने मन से आगे बढ़ा सकें। कक्षा में यह अभ्यास करवाइए।
8. घर की भाषा और स्कूल की भाषा को सुनकर समझने में फर्क क्यों होता है?

9. एक बच्चा यदि कक्षा में कहानी सुनाते समय अटक–अटक कर बोले या गलत उच्चारण करें तो आप उसके साथ किस प्रकार से काम करने की योजना बनाएँगे।

10. भाषा सिखाने के क्रम में किस स्तर पर शुद्धता पर ध्यान देना चाहिए और किस स्तर पर प्रवाहिता पर और क्यों?

प्रदत्त कार्य (Asignment)

- आपसी बातचीत में मशगूल कुछ बच्चों का छिपकर अवलोकन कीजिए। और देखिए कि वे क्या–क्या बातें करते हैं। उनकी बातचीत को आप कक्षा में कैसे इस्तेमाल करेंगे?

- किसी कहानी को नाटक रूप में कक्षा– 3 से 5 के बच्चों से करवाइए। इसके लिए बच्चों के साथ मिलकर संवाद बनाइए, फिर बच्चों को उस पर अभिनय करवाइए। अपने अनुभव का विवरण दीजिए।

टिप्पणी

इकाई 5 पढ़ना

संरचना

5.0 परिचय

5.1 अधिगम उद्देश्य

5.2 पढ़ने का क्या मतलब है?

5.3 पढ़ सकने का क्या महत्त्व है?

5.4 पढ़ना सिखाने के विभिन्न तरीके या विधियाँ

5.4.1 पढ़ना सिखाने के प्रचलित तरीके व उनमें खामियाँ

5.4.2 पढ़ना सीखने की शर्तें

5.4.3 पढ़ना सिखाने के लिए क्या कर सकते हैं?

5.4.4 कुछ गतिविधियाँ

5.5 पढ़ने–लिखने का आपसी रिश्ता

5.6 सारांश

5.7 संदर्भ ग्रंथ/कुछ उपयोगी पुस्तकें

5.8 अंत्य इकाई अभ्यास

5.0 परिचय

इस इकाई में हम यह समझने की कोशिश करेंगे कि पढ़ने का मतलब क्या है? और कोई व्यक्ति जब पढ़ पाता है, तो वह क्या–क्या करता है? पढ़ने में क्या–क्या बातें शामिल हैं? इसके अलावा हम इस बात पर भी विचार करेंगे कि पढ़ना सीखने के लिए क्या–क्या आवश्यक है। किस तरह के प्रयासों से पढ़ना सीखने–सिखाने में मदद मिलती है। हम यह भी चर्चा करेंगे कि पढ़ने और लिखने में क्या संबंध है? चूँकि प्राथमिक शाला का एक प्रमुख लक्ष्य वहाँ आने वाले बच्चों को पढ़ने का हुनर सिखाना है इसलिए यह महत्त्वपूर्ण है कि इसकी संभावना को बढ़ाने की दिशा में प्रयास किए जाएँ। इस इकाई में हम इस बात पर भी चर्चा करेंगे कि पढ़ना सीखने की प्रक्रिया रोचक कैसे बन सकती है और इसमें संदर्भ की रोचकता की क्या भूमिका है। हम इस तरह के प्रश्नों पर भी विचार करेंगे कि पढ़ना सीखने में क्या कोई चरण व क्रम पूर्व निर्धारित किया जा सकता है? क्या बच्चा पढ़ने को टुकड़ों में सीखेगा या फिर संपूर्णता में।

5.1 अधिगम उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- पढ़ने के व्यापक अर्थ को समझ पाएँगे;
- बच्चों के नहीं पढ़ पाने के कारणों को जान पाएँगे;
- स्कूलों में पढ़ना सिखाने की प्रचलित पद्धतियों का विश्लेषण कर पाएँगे;
- इस तथ्य को समझ पाएँगे कि भाषा को समग्रता में ही सीखा जा सकता है टुकड़ों में नहीं;
- पढ़ने की संभावित प्रक्रियाओं को पहचान पाएँगे;
- पढ़ना सिखाने की रणनीतियों का कक्षा में इस्तेमाल कर पाएँगे;
- पढ़ना सिखाने में पाठ्यपुस्तक के अलावा अन्य संदर्भों/पठन सामग्रियों के महत्त्व को बता पाएँगे;
- पढ़ने और लिखने के आपसी संबंध को स्पश्ट कर पाएँगे।

5.2 पढ़ने का क्या मतलब है?

प्राथमिक कक्षाओं को पढ़ाने में अध्यापकों को जो चुनौतियाँ झेलनी पड़ती हैं, उनमें सबसे बड़ी और कठिन चुनौती पढ़ना सिखाना है। सबसे कठिन इसलिए है क्योंकि पढ़ना एक सहज कौशल नहीं है। उसमें कई कौशल और बोध–क्षमताएँ शामिल हैं। यह सोचने वाली बात है कि हम पढ़ने का क्या मतलब समझते हैं? सामान्यतः शिक्षक यह सोचते हैं कि बच्चा किताब में लिखी बातों को उसी रूप में पढ़ दे, चाहे लिखी बातों का अर्थ उसे समझ में आए या नहीं।

पढ़ना एक सृजनात्मक कार्य है क्योंकि पढ़ने वाला सामने लिखी बातों का हू–ब–हू उच्चारण नहीं करता है बल्कि अपने अनुभवों से उनका अर्थ भी गढ़ता जाता है। पढ़ने की प्रक्रिया में छपी हुई लिखित सामग्री का अर्थ ग्रहण करना महत्त्वपूर्ण है। जब हम पढ़ते हैं तो हमारी आँखें और दिमाग सारे अक्षरों, विराम चिह्नों, सारे शब्दों पर ध्यान नहीं देते अर्थात् पढ़ने में वाक्य के प्रत्येक हिस्से को नहीं देखना होता है। अगर ऐसा होता तो छोटी–छोटी सूचनाओं पर गौर करना काफी मुश्किल और बोझ का काम होता और अधिकांश लोग जिस गति से पढ़ते हैं, वह असंभव हो जाता। एक धारा प्रवाह पाठक पढ़ते समय किसी अक्षर, शब्द और वाक्य के पूरे आकार पर ध्यान नहीं देता है। उसकी आँखें अंकित सामग्री के छोटे से अंश पर गौर करती हैं और शेष भाग वह अपने पूर्व अनुभवों और अनुमान के आधार पर ग्रहण करता है। पाठक का यह अनुमान आम दुनिया से उसके पूर्व परिचय पर आश्रित होता है। इस तरह पढ़ने में निम्नलिखित बातें शामिल हैं–

टिप्पणी

- लिखे हुए का अर्थ ग्रहण करना ही पढ़ना है।
- पढ़ने का अर्थ है लिखित सामग्री से धारणाओं को गढ़ना, विचारों को आपस में जोड़ पाना और उन्हें अपनी स्मृति में रखना।
- पढ़ना सिर्फ वर्णमाला की पहचान, शब्द तथा वाक्य को बोल भर पाना नहीं है, बल्कि इसके आगे बहुत कुछ और भी है। यानी कि लिखे हुए के अर्थ को समझकर अपना नज़रिया बनाना या फिर अपनी निजी समझ विकसित करना है।
- पढ़ने का मतलब शब्दों को हिज्जे करके बोलना नहीं है। बल्कि लिखे हुए के साथ संवाद करना, अपने अनुभवों एवं समझ के साँचे में ढालते हुए उससे अर्थ ग्रहण करना है।
- पढ़ना एक समेकित प्रक्रिया है, इसमें अक्षरों की आकृतियाँ, उनसे जुड़ी ध्वनियाँ, वाक्य–विन्यास, शब्दों और वाक्यों के अर्थ तथा अनुमान लगाने का कौशल शामिल है।
- पढ़ने में महत्त्वपूर्ण है, लिखी हुई जानकारियों या संकेतों का अर्थ ग्रहण करना।

इस प्रकार स्पष्ट है कि पढ़ना अनेक कुशलताओं का एक समूह है जो लिखी या छपी भाषिक सामग्री को अर्थ से जोड़ने में हमारी मदद करता है। 'पढ़ना' कौशल की सभी परिभाषाओं में जिस बिन्दु पर सबसे ज्यादा जोर दिया गया है, वह है– अर्थ। अर्थात् पढ़ने का लक्ष्य ही पढ़कर अर्थ समझने से है।

पाठगत प्रश्न

1. पढ़ने में महत्त्वपूर्ण है–

   (क) लिखे हुए का अर्थ ग्रहण करना (ख) सारे शब्दों को पढ़ना

   (ग) धारा प्रवाह पढ़ना (घ) विराम चिह्नों का ध्यान रखना

2. पढ़ने में कौन–कौन सी बातें शामिल हैं?

   .....

   .....

   .....

3. पढ़ना एक सृजनात्मक कार्य है, कैसे?

   .....

   .....

   .....

5.3 पढ़ना आने का क्या महत्त्व है?

वैसे तो ज्ञान का निर्माण बिना किताबों के भी हो सकता है। जब तक कि लिपि और छपाई का आविश्कार व विकास नहीं हुआ था, दुनिया के सभी समाजों में संस्कृति व ज्ञान का सारा आदान–प्रदान और विस्तार बिना किताबों को पढ़े–लिखे ही होता रहा। आज भी कई समाजों में संस्कृति व ज्ञान का हस्तांतरण मौखिक भाषा में ही होता है। लेकिन आज की दुनिया में किताबों का बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है और किताबें पढ़ना–लिखना आवश्यक–सा हो गया है। समझकर पढ़ना हमारे व्यक्तित्व को सुदृढ़ बनाता है और हमें आत्मविश्वास देता है। पढ़ने की समर्थता/सक्षमता के कारण ही हम न केवल इस सजीव संसार बल्कि उस लोक में भी पहुँच जाते हैं जो हमसे परे है, कोसों दूर है। साहित्य इसका प्रमुख उदाहरण है। "पढ़ना जीवन के विभिन्न पहलुओं और इसके बदलते रंगों को समझना है। साथ ही एक सार्थक जीवन जीने की कला को समझना भी है। हमारे व्यक्तिगत अनुभव सीमित होते हैं और इनका विस्तार पढ़ने से ही होता है। किताबें हमारा परिचय उन अनुभवों और विचारों से कराती हैं जिनमें असीम बुद्धिमता और परिपक्वता की झलक मिलती है।"(पं. जवाहर लाल नेहरू)

कुल मिलाकर पढ़ने की समर्थता से व्यक्ति के ज्ञान का विस्तार होता है। उसकी सोच व्यापक, तार्किक एवं उदार हो जाती है। पढ़ सकने की क्षमता के कारण ही व्यक्ति वृहत् सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक संदर्भों से जुड़ पाता है।

5.4 पढ़ना सिखाने के विभिन्न तरीके या विधियाँ

आमतौर पर विद्यालयों में बच्चों को पढ़ना सिखाना शिक्षकों के लिए सबसे मुश्किल काम होता है क्योंकि पढ़ना सिखाने की कोई एक सरल व अचूक विधि नहीं है। हर विधि की अपनी सीमाएँ हैं। अध्यापकों को कोई सुझा नहीं सकता कि उनकी परिस्थिति में कौनसी विधि सही व कारगर है। इसके बावजूद पढ़ना एक स्फूर्त्तिवान काम है क्योंकि बच्चे के जीवन का बहुत कुछ उस पर निर्भर है। यदि एक बार बच्चों को पढ़ने और पुस्तकों में रुचि से सफलतापूर्वक जोड़ दिया जाए तो उसके अंत की कोई सीमा ही नहीं है।

असल में सवाल यह है कि आखिर बच्चों को पढ़ना सिखाने का काम सफलतापूर्वक कैसे किया जाए? इस पर जरा सोचें और अपने आस–पास देखें तो हमें विफलता ही देखने को मिलती है, इस पर विचार करना चाहिए। लाखों, करोड़ों बच्चे हर साल पढ़ना सीखते हैं, लेकिन इनमें से बहुतों को ठीक से पढ़ना ही नहीं आता है। बहुत से बच्चे परीक्षाएँ पास करते चले जाते हैं लेकिन उनमें पढ़ने की रुचि का विकास नहीं हो पाता। इन विफलताओं के पीछे कहीं न कहीं कमजोर शिक्षण को जिम्मेदार माना जा सकता है।

किसी शिक्षक को यह बताने की जरूरत नहीं है कि पढ़ने का स्वस्थ कौशल बच्चे के संपूर्ण विकास में क्या भूमिका निभाता है। लेकिन शिक्षकों को शायद यह पता नहीं है कि पढ़ने का स्वस्थ कौशल किसे कहेंगे और उसका विकास कैसे किया जा सकता है? जब तक

टिप्पणी

बच्चा पढ़ी गई सामग्री को समझते हुए पहले के अनुभवों को जोड़ने में समर्थ नहीं हो पाता, तब तक हम उसे पढ़ने की क्षमता का स्वस्थ कौशल नहीं कह सकते हैं। इसी संदर्भ में, पढ़ने को छपी या लिखी हुई सामग्री से अर्थ ढूँढ़ने की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

अगर पढ़ने की उपर्युक्त परिभाषा हम मान लें तो हमारे आस–पास अनौपचारिक रूप से या प्राथमिक स्कूलों में जिस तरह से पढ़ना सिखाया जाता है वह उचित नहीं है। उदाहरण के लिए वर्णमाला के अक्षरों को जोर–जोर से बोलकर रटना, बिना समझे कहानी को दुहराना, बिना मतलब समझे पढ़ना इत्यादि हमारी परिभाषा की दृष्टि से सही गतिविधियाँ नहीं हैं। ऐसा करते समय अक्सर बच्चे लिखित भाषा को किसी अर्थ से नहीं जोड़ पाते हैं। बहुत सारे स्कूलों में आज भी 'क' को 'कमल' और 'ख' को 'खरगोश' जैसे पारंपरिक शब्दों से बाँध दिया जाता है। फिर जहाँ भी 'क' और 'ख' दिखाई देते हैं तो बच्चे 'कमल' का 'क' और 'खरगोश' का 'ख' कह कर ही पहचान पाते हैं। इसी तरह यदि कहानी शब्द–दर–शब्द तोड़–तोड़कर पढ़ी जाए तो उसका कोई खास मतलब या अर्थ नहीं निकलता है और कहानी से संबंध बनाना भी संभव नहीं हो पाता। जो लोग यह कहते हैं कि इन गतिविधियों से आगे चलकर, बच्चे अर्थग्रहण करने की प्रक्रिया से जुड़ जाते हैं शायद कुछ हद तक यह सही हो। पर सही भी तब हो जब बच्चे स्कूलों में इतने वर्षों तक टिकें कि वे सार्थक रूप से पढ़ना सीखने के अवसर पा सकें। हमें उन बच्चों के बारे में सोचना होगा जो कक्षाओं में आज भी अक्षरों को बार–बार दोहराने, उनकी नकल उतारने और शब्दों को बार–बार लिखने व जोर–जोर से बोलने से बोर हो जाते हैं। इस तरह की कवायद से भी बहुत कम बच्चे ही पढ़ना सीख पाते हैं। वास्तव में पढ़ना सिखाने की यह प्रक्रिया बहुत ही उबाऊ और कम उपजाऊ है। इसी वजह से बहुत सारे बच्चे तो शुरुआती शिक्षा प्राप्त करने से पहले ही स्कूल छोड़ देते हैं।

पाठगत प्रश्न

1. बच्चों में पढ़ने की रूचि का विकास कैसे किया जा सकता है?

   (क) पाठ्यपुस्तकों द्वारा

   (ख) वर्णमाला के अक्षरों को रटवाकर

   (ग) पढ़ना सिखाने की रोचक प्रक्रियाओं द्वारा

   (घ) कहानी रटवाकर

2. पढ़ने का स्वस्थ कौशल किसे कहेंगे?

   .....

   .....

   .....

3. बहुत सारे बच्चे शुरुआती शिक्षा प्राप्त करने से पहले ही स्कूल क्यों छोड़ देते हैं?

.....

.....

.....

5.4.1 पढ़ना सिखाने के प्रचलित तरीके व उनमें खामियाँ

आज हमारे स्कूलों में जिन तरीकों से पढ़ना सिखाया जाता है ऐसा लगता है कि उनके मूल सिद्धान्त कहीं खो गए हैं। नीचे कई तरीके ऐसे दिए गए हैं जो अमूमन स्कूलों में पढ़ना सिखाने के लिए इस्तेमाल किए जाते हैं। लेकिन ये तरीके बच्चों को पढ़ना सीखने में मदद करने की बजाय उनके लिए और मुश्किलें पैदा करते हैं।

पढ़ने के नियमों पर शीघ्र अधिकार का लक्ष्य रखा जाता है :

यह बात बेतुकी है क्योंकि पढ़ने के ऐसे कोई नियम नहीं हैं। कम से कम ऐसे तो बिल्कुल नहीं जो बच्चों को पर्याप्त रूप से परिभाषित करके बताए जा सकें। सभी सक्षम पाठक पढ़ने के बारे में आवश्यक निहित ज्ञान हासिल कर लेते हैं किन्तु यह ज्ञान पढ़ने के अभ्यास से विकसित होता है न कि स्कूल में शिक्षा के द्वारा। सीखने की यह प्रक्रिया उस प्रक्रिया जैसी ही है जिसके माध्यम से बच्चे मौखिक भाषा को बोलने व समझने के नियम बिना किसी औपचारिक प्रशिक्षण के विकसित कर लेते हैं। ऐसा कोई प्रमाण नहीं है कि व्याकरण सिखाने से बच्चों को बोलना सीखने में कोई मदद मिलती है और न ही इस बात का कोई सबूत है कि उच्चारण या अन्य गैर–पठन गतिविधियों से पढ़ने के विकास में कोई मदद मिलती है।

आम तौर पर जिन्हें पढ़ने के नियम कहा जाता है वे मात्र पढ़ने का निर्देश देने के संकेत हैं। पढ़ना सीखना नियम रटने का मामला नहीं है। बच्चे पढ़ना, पढ़कर ही सीखते है।

पढ़ने में यह सुनिश्चित किया जाता है कि बच्चे ध्वनि के नियम सीखकर उन पर अमल करें

नियमानुसार पढ़ने का एक गड़बड़ पहलू यह है कि इसमें माना जाता है कि पढ़ने की क्षमता उच्चारण और हिज्जों के संबंध जानने से आती है। परन्तु वास्तव में पढ़ना मात्र लिखे हुए को उच्चारण कर लेने से पूरा नहीं हो जाता। उच्चारण करने से पहले ही अर्थ पकड़ना होता है और मात्र ध्वनि पैदा करने से अर्थ नहीं बनता। अक्षरों को आवाज में बदलना न सिर्फ अनावश्यक है बल्कि फालतू मेहनत वाला भी है। थोड़ा ध्यान देने पर स्पष्ट हो जाता है कि धाराप्रवाह पढ़ने वाला पाठक, अर्थ समझने के लिए, अक्षरों को ध्वनियों में बदलने के चक्कर में नहीं पड़ते। इसके बावजूद कई बार यह दलील दी जाती है कि बच्चों को उच्चारण पर अधिकार करना ही होगा अन्यथा वे ऐसे शब्दों को कैसे पहचानेंगे जिन्हें उन्होंने पहले लिखित रूप में नहीं देखा है।

टिप्पणी

बच्चों को एक बार में एक ही अक्षर या शब्द सिखाने पर जोर दिया जाता है :

यह गलत धारणा काफ़ी व्यापक है कि कुछ बच्चों को चीज़ों के नाम और अक्षर व शब्द सीखने में दिक्कत होती है और इसे ठीक करने का एकमात्र उपाय बारम्बार दोहराना है। यह दृष्टिकोण सीखने की प्रक्रिया के अति सरलीकरण पर टिका है। बच्चे जिन्दगी के पहले छह वर्षों में प्रतिदिन लगभग एक दर्जन शब्द सीखते हैं जिनमें से अधिकांश 'नाम' होते हैं। ये शब्द वे प्रायः एक ही प्रयास में सीख जाते हैं।

बच्चे जिस तरह से समूहों को परिभाषित करना सीखते हैं वह क्रिया काफी शिक्षाप्रद है। वे उस स्थिति को देखते हैं जिसमें नाम का उपयोग होता है फिर कुछ ऐसे लक्षण ढूँढ़ते हैं जिससे उस स्थिति को भविष्य में पहचान सकें। वे अवधारणाओं को समझने के लिए परिकल्पनाएँ बनाते हैं। बच्चे जिस तरह की गलतियाँ करते हैं, उनसे हम यह जान सकते हैं कि ये परिकल्पनाएँ क्या हैं यदि वे सभी चार पैर वाले पशुओं को कुत्ता कहते हैं तो यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि उनकी वर्तमान परिकल्पना में कुत्ते का अर्थ चौपाए जानवर है। यदि वे इस नाम को चौपाए जानवर और मेज पर लागू करते हैं तो माना जा सकता है कि 'जीवित होना' उनकी परिकल्पना में नहीं है। यदि वे सिर्फ अपने कुत्ते को कुत्ता कहते हैं तो इसका मतलब है कि वे पूरा सामान्यीकरण नहीं कर रहे।

बच्चे ऐसी परिकल्पनाएँ तभी बना पाएँगे, जब वे समूह के सदस्यों की तुलना ऐसी चीजों से करेंगे जो सदस्य नहीं है। यह उतना ही महत्त्वपूर्ण है कि वे उन चौपाए जानवरों को जाने, जिन्हें कुत्ता नहीं कहा जाता। बच्चे अपनी परिकल्पनाओं में सुधार सिर्फ उसे परखकर या अन्यों के विचार जानकर ही कर सकते हैं।

इसी प्रकार की स्थिति अक्षरों या शब्दों के नाम सीखने में भी होती है। मात्र 'क' दिखाकर बार–बार बताना कि यह 'क' है, से बात नहीं बनेगी। वे शायद फिर भी 'क' को 'व' और 'व' को 'क' कहते रहेंगे। इसके बजाय उन्हें यह ढूँढ़ने देना चाहिए कि 'क' और 'व' किस प्रकार से भिन्न हैं। इसका अर्थ है कि पहले वे दोनों को एक साथ देख पाएँ, तभी वे समझ पाएँगे कि 'क' किस तरह 'व' से अलग है।

पढ़ने में बच्चों के अनुमानों को निरुत्साहित किया जाता है और यह अपेक्षा की जाती है कि बच्चे सावधानीपूर्वक पढ़ें :

सक्षम पाठक न्यूनतम दृश्य जानकारी का अधिकतम उपयोग करते हैं। अर्थ हेतु पढ़ना, शब्द हेतु पढ़ने से आसान है। तेजी से पढ़ना, धीमे पढ़ने से आसान है। अभी तक जो कहा गया उसका निचोड़ यह है कि 'सावधानीपूर्वक पढ़ना' सक्षम पठन नहीं है और बगैर उद्देश्य के पढ़ना तो पढ़ना ही नहीं है। गुडमैन ने पढ़ने को 'मनोभाषाई अटकलों का खेल' ठीक ही कहा है। पढ़ने के लिए पूर्वानुमान करना जरूरी है; धूल में लट्ठ नहीं बल्कि जानकारी के आधार पर पूर्वानुमान। जानकारी आधारित अटकल का अर्थ है पहले से मालूम अदृश्य जानकारी का बेहतर उपयोग। दूसरे शब्दों में, पढ़ते हुए लगातार अनुमान करना चाहिए, जिससे अनिश्चितता कम होती चले और अर्थ समझने के लिए आवश्यक दृश्य जानकारी की मात्रा में कमी हो।

टिप्पणी

जब हम कोई अपरिचित या मुश्किल सामग्री पढ़ते हैं, कोई जटिल उपन्यास या तकनीकी लेख पढ़ते हैं या विदेशी भाषा में कुछ पढ़ते हैं, तो हम सभी जानते हैं कि लगातार शब्दकोश देख–देखकर वाक्य–दर–वाक्य घिसटना मुश्किल होता है। ऐसे में हमें लग सकता है कि गति थोड़ी कम कर दें, पर वास्तव में ऐसी स्थिति में सबसे बढ़िया रणनीति होगी कि और तेज पढ़ें, पढ़ते जाएँ।

अब तक जितनी बातें कही गई हैं उनसे एक महत्त्वपूर्ण सामान्य सिद्धान्त यह उभरता है कि पढ़ना स्वयं संकेत प्रदान करता है। किसी पाठ में अपरिचित शब्द पहचानने का सबसे बढ़िया तरीका है कि शेष पाठ में से उस शब्द के बारे में निष्कर्ष निकाला जाए। किसी मुश्किल उद्धरण का अर्थ खोजने का सर्वश्रेष्ठ तरीका है कि उसको और पढ़ा जाए।

शब्द दर शब्द पढ़ने पर जोर दिया जाता है :

अलग–थलग शब्दों को पहचानने या सीखने पर जोर नहीं डालने का एक और कारण यह भी है कि यह सबसे कठिन तरीका है। धाराप्रवाह पढ़ने वाला पाठक दूसरे संकेतों का उपयोग करते हैं। कोई अक्षर जब किसी शब्द में आता है या कोई शब्द जब किसी सार्थक वाक्य में आता है तो उसे पहचानना ज्यादा आसान होता है बनिस्बत कि उसके अकेले आने के। शब्दों को पहचानना, पढ़ने का सबसे महत्त्वपूर्ण अंग नहीं है। अकेले पड़े शब्द को पहचानने के लिए ज्यादा दृश्य संकेतों की जरूरत होती है, बनिस्बत कि किसी वाक्य में प्रयुक्त शब्द के। चूँकि हमारे देखने के सिस्टम में जानकारी पचाने की क्षमता और कामकाजी याददाश्त सीमित है इसलिए बहुत अधिक मात्रा में दृश्य जानकारी मिलने से पढ़ना कठिन हो जाता है। पढ़ना सीखने का महत्त्वपूर्ण अंग यह सीखना है कि यथासंभव न्यूनतम दृश्य जानकारी का उपयोग किया जाए।

धाराप्रवाह पढ़ने वाले पाठक शब्द नहीं पढ़ते, वे अर्थ पढ़ते हैं। अर्थ हेतु पढ़ना, शब्द पढ़ने से कहीं ज्यादा आसान है। बच्चे निःसंदेह इस बात को जानते है क्योंकि हर शब्द को पढ़ना उनकी जानकारी पचाने की क्षमता पर बहुत दबाव डालता है।

पढ़ने में सटीकता व शुद्धता का आग्रह होता है :

बिना गलतियों के पढ़ना नहीं आ सकता। हम पशुओं, पेड़–पौधों, अक्षरों, शब्दों आदि के नाम पढ़ना नहीं सीख पाएँगे यदि हम 'गलत' होने की संभावना को स्वीकार नहीं करते। वास्तव में पढ़ना सीखने में सबसे बड़ी बाधा यही आ सकती है कि गलत होने के डर से बच्चे पढ़ें ही नहीं। अतः बच्चों के द्वारा पढ़ने के दौरान की गई गलतियाँ पढ़ना सीखने की प्रक्रिया का अनिवार्य एवं स्वाभाविक चरण है।

यदि कहने से पहले ही बच्चे को मालूम है कि वह सही है तो बाद में पता चलने पर उसे क्या हासिल होगा? परन्तु यदि बच्चे, किसी वस्तु के नाम या अर्थ के बारे में कुछ कहते हैं और जानते हैं कि यह गलत भी हो सकता है, तो बाद में मिलने वाले परिणाम से वे कुछ सीख पाएँगे। यदि वे सही थे तो उनकी परिकल्पना की पुष्टि होगी और यदि वे गलत हुए तो भी उन्हें कुछ महत्त्वपूर्ण जानकारी मिलेगी कि उन्हें अपनी परिकल्पना को बदलना है।

टिप्पणी

पढ़ते समय गलती होने पर तत्काल टोका जाता है :

शिक्षक के लिए यह बहुत आसान है कि जैसे ही कोई बच्चा किसी शब्द को गलत पढ़े, तो तुरन्त उसे बता दिया जाए। परन्तु इससे कोई मदद नहीं मिलती क्योंकि वह बच्चा तो शब्द पहचान के लिए पढ़ ही नहीं रहा। वह तो अर्थ हेतु पढ़ रहा है। यदि बच्चा शब्द–पहचान का अभ्यास कर रहा है और जानना चाहता है कि क्या अमुक शब्द 'हाथी' है तो तुरन्त टिप्पणी मददगार हो सकती है। परन्तु यदि बच्चा साधारण अर्थ जानने के लिए पढ़ रहा है तो तुरन्त टिप्पणी न सिर्फ अनुपयोगी है बल्कि नुकसानदेह भी है। इन बातों से यह भी स्पष्ट होता है कि पढ़ने के क्रम में हम स्वयं ही टिप्पणी करते चलते हैं। हम स्वयं की समझने की गलतियाँ और शब्द पहचान की गलतियाँ जाँचते चल सकते हैं बशर्ते कि हम अर्थ हेतु पढ़ रहे हों।

बच्चों के स्वयं पढ़ना सीखने की क्षमता को नकारा जाता है :

बच्चे अक्सर पढ़ने के ऐसे कई पक्ष स्वयं सीख जाते हैं जो उन्हें कोई नहीं पढ़ाता, न माता–पिता न अध्यापक। उदाहरण के लिए बच्चों को यह कोई नहीं बताता कि 'मर' में 'म' पूरा है लेकिन 'रम' में वही 'म' आधा है। इसी प्रकार यह नियम कि 'संबंध' जैसे शब्द में पहला अनुस्वार 'म्' के बराबर है क्योकि उसके बाद पवर्ग की 'ब' ध्वनि है और दूसरा अनुस्वार 'न्' के बराबर है क्योंकि उसके बाद तवर्ग की 'ध' ध्वनि है। अर्थात जिस वर्ग की ध्वनि, उसी वर्ग का नासिक। पढ़ने के यह नियम बच्चे स्वयं पकड़ लेते हैं। इसी प्रकार 'र' किस रूप में कहाँ दिखाई देगा और वह कैसे पढ़ा जाएगा, इसके नियम भी बच्चा स्वयं ही सीखता है। 'क्रम, कर्म, ट्रक' में 'र' की ध्वनि के अलग–अलग रूप हैं। 'क्रम और ट्रक' में 'र' पूरा है लेकिन उसको लिखने का रूप अलग–अलग हैं। जो रूप हमें 'ट्रक' में दिखाई देता है वह केवल टवर्ग के साथ ही आता है। और 'कर्म' में तो 'र' आधा है। पढ़ने के यह सब जटिल नियम बच्चा स्वयं पकड़ लेता है। अगर हम बच्चों की इस तरह की क्षमता को ध्यान में रखें तो शायद हमारे पढ़ाने के तरीके बिल्कुल बदल जाए। शुद्धता और गलतियाँ सुधारने की अपेक्षा हमारा ध्यान इस ओर जाएगा कि बच्चों को अधिक से अधिक रूचिपूर्ण और चुनौती भरी सामग्री दी जाए।

पाठगत प्रश्न

1. पढ़ना सीखने की प्रक्रिया का अनिवार्य एवं स्वाभाविक चरण है?

   (क) पढ़ने के दौरान की गई गलतियाँ (ख) गलतियाँ ना करना

   (ग) अक्षरों को रटना (घ) शब्द को रटना

2. पढ़ना सीखने के दौरान किसी शब्द को पढ़ने में की गई गलती पर बच्चे को तुरंत या बीच में ही नहीं टोकना चाहिए। क्यों?

   .....

.....

.....

3. पढ़ना सीखना नियम रटने का मामला नहीं है। क्यों?

.....

.....

.....

4. पढ़ना सिखाने के प्रचलित तरीके क्या–क्या हैं?

.....

.....

.....

5. पढ़ना सिखाने के प्रचलित तरीकों में क्या–क्या खामियाँ हैं? उदाहरण देकर बताइए।

.....

.....

.....

6. इस बात का क्या प्रमाण है कि पढ़ने के बहुत से पक्ष बच्चे स्वयं ही सीख जाते हैं?

.....

.....

.....

5.4.2 पढ़ना सीखने की शर्तें

पढ़ने के भरपूर अवसर हों :

भाषा की कक्षा में पढ़ना सिखाते समय दो–तीन बातों पर ध्यान देना चाहिए। पहली बात तो यह कि पढ़ने–लिखने की जो सामग्री हो वह सार्थक हो और बच्चे के स्तर की हो। दूसरी बात यह कि जो सामग्री दी जा रही है वह परिचित भाषा में हो। तीसरी बात यह कि शिक्षक बच्चों को अलग–अलग तरह की पठन सामग्री को पढ़ने और समझने के अधिकाधिक अवसर दें। शिक्षक बच्चों के साथ सार्थक संवाद करें, उनकी बातों को प्यार से सुनें और उसे दूसरों की बातचीत को सुनने का मौके दें। पढ़ना सीखने में लिखित सामग्री को अक्षर, मात्रा, उच्चारण आदि में बाँटकर टुकड़ों में सीखने से कोई मतलब नहीं निकलता है और न ही ये सब किसी निश्चित क्रम में सीखे जा सकते हैं। पढ़ना सीखना, पढ़कर ही सीखा जा सकता है। बच्चे पढ़ना तभी सीखेंगे जब पढ़ना उनके लिए मजेदार होगा।

टिप्पणी

पढ़ना उद्देश्यपूर्ण और चुनौतीपूर्ण हो :

पाठक के लिए पढ़ने की सामग्री सार्थक और चुनौतीपूर्ण होनी चाहिए। जब हम कुछ भी पढ़ते हैं, तो कुछ उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए पढ़ते हैं, जैसे– आनंद के लिए पढ़ना, जिज्ञासा के लिए पढ़ना, कहानी के घटनाक्रम को जानने के लिए पढ़ना, कहानी का अंत क्या होगा जानने के लिए पढ़ना, हमारे आस–पास जो हो रहा है उसकी बात कही गई है या नहीं, यह जानने के लिए पढ़ना। कक्षा में अगर इस तरह की चुनौतियाँ मिलें और इन चुनौतियों के कारण उन्हें कुछ जानने, बताने, अनुभव बाँटने के लिए मौके मिलेंगे तो वे पढ़ना जल्दी सीखेंगे। अगर अर्थ तक पहुँचना चुनौती होगी तो वे पढ़ने के लिए प्रेरित होंगे। जब हम कक्षा में बच्चों को एक समृद्ध लिखित वातावरण उपलब्ध कराते हैं तो दरअसल हम एक 'उत्साहपूर्ण कक्षा' का निर्माण करते हैं। सार्थक और चुनौतीपूर्ण लिखित भाषा से समृद्ध वातावरण बच्चों को पढ़ना सीखने के लिए प्रेरित करता है।

संदर्भपूर्ण पठन सामग्री :

बच्चे भाषा सीखना और पढ़ना किसी संदर्भ में करते हैं। कहानियों और कविताओं की किताबें अपने आपमें इस उद्देश्य के लिए एक रोचक संदर्भ है। कहानी सुनाते–सुनाते आप बीच में रुक जाएँ ताकि बच्चे आगे का शब्द/वाक्य पूरा करें। कई महत्त्वपूर्ण अवधारणाएँ कहानी का सहज हिस्सा होती हैं (जैसे– बड़ा–छोटा, दूर–पास, मोटा–पतला आदि) और बच्चे इन्हें कहानी के माध्यम से खूब पकड़ते हैं। कहानी के संदर्भ से इनका एहसास होता है और अभिनय से उनका अर्थ और स्पष्ट हो जाता है। यही नहीं इसके अलावा बच्चों को संदर्भ के हिसाब से अपने आपको विभिन्न पात्रों और काल्पनिक स्थितियों में ढालने का मौका मिलता है। पहले तो बच्चे सिर्फ कुछ पात्रों की विशेषताओं की नकल करते हैं जैसे उनकी चाल आदि की। उदाहरण के लिए मुर्गा कैसे बोलता है, खरगोश कैसे फुदकता है, घोड़ा कैसे लात मारता है आदि। फिर ये ही संदर्भ बच्चों को पढ़ना सीखने में मदद करते हैं।

भाषा की परिचित वाक्य–संरचना का इस्तेमाल :

बच्चे पढ़ते समय अपनी परिचित भाषा को आधार मानकर अनुमान द्वारा पढ़ते हैं। पठन सामग्री बच्चों की भाषा के जितनी करीब होगी, पढ़ना सीखना उतना ही आसान होगा। इसीलिए कक्षा में बच्चों को पढ़ी व सुनी हुई सामग्री से जुड़कर उसके उपयोग के अवसर देने चाहिए। जैसे– बच्चे ने घर में या बाहर किसी से कोई कहानी सुनी हो और यदि वही कहानी उसे पढ़ने को मिले तो पढ़ना उसके लिए आसान होगा।

पढ़ने का कोना :

यह ज़रूरी है कि कक्षा में एक ऐसा कोना हो जहाँ अच्छे बाल–साहित्य की चुनिंदा पुस्तकें बच्चों के पढ़ने के लिए रखी गई हों। इन पुस्तकों का इस्तेमाल बच्चों को कहानियाँ पढ़कर सुनाने के लिए भी किया जा सकता है। पढ़ी गई कहानी को सुनना, पढ़ना सीखने में बेहद मददगार साबित होता है। बच्चों की परिचित कहानी को जब बार–बार उनके लिए पढ़ा

जाता है तब बच्चे कहानी की घटना, घटनाक्रम, वाक्य संरचना से भी परिचित होते जाते हैं जिससे उन्हें अनुमान लगाकर पढ़ने में मदद मिलती है। बच्चों की इसमें रुचि बनी रहे इसके लिए ज़रूरी है कि इन पुस्तकों में अच्छी और नई पुस्तकें जुड़ती रहें।

पाठगत प्रश्न

1. पढ़ना सीखने की आवश्यक शर्त नहीं है–

   (क) महँगी किताबें

   (ख) संदर्भपूर्ण पठन सामग्री

   (ग) भाषा की परिचित वाक्य संरचना का इस्तेमाल

   (घ) पढ़ने के भरपूर अवसर

2. पढ़ना सीखने–सिखाने में संदर्भपूर्ण पठन सामग्री का क्या महत्त्व है?

   .....

   .....

   .....

3. कक्षा में 'पढ़ने का एक कोना' से क्या तात्पर्य है? इस कोने का आप कैसे इस्तेमाल करेंगे?

   .....

   .....

   .....

5.4.3 पढ़ना सिखाने के लिए क्या कर सकते हैं?

अभी हमने देखा कि पढ़ना सिखाने के कौन–कौन से प्रचलित तरीके हैं और उनमें क्या–क्या खामियाँ हैं। यदि प्रचलित तरीके सही नहीं हैं तो फिर कक्षा में पढ़ना सिखाने के लिए और क्या किया जा सकता है?

यहाँ कुछ तरीके व गतिविधियाँ सुझाई गई हैं। जो लोग पारंपरिक विधियों के आदी हैं, उन्हें ये आश्चर्यचकित करने वाली या असंभव सी लग सकती हैं। अगर पढ़ना सिखाने की प्रचलित विधियाँ रोचक एवं प्रभावी होतीं तो हमें इसके लिए नई गतिविधियों या तरीकों की जरूरत ही नहीं होती।

किताबों से शुरुआत करें

पढ़ना सिखाने की शुरुआत फ्लैश कार्ड, चार्ट या लकड़ी के अक्षरों जैसी सामग्री से करने

टिप्पणी

की बजाय किताबों से करना ज्यादा ठीक है। आगे चलकर बच्चे किताबें पढ़ सकें यही हमारा उद्देश्य भी है। चार्ट एवं अन्य सामग्री कभी–कभी उपयोग में आ सकती हैं लेकिन वे पढ़ना सीखने में इतनी अधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका नहीं निभा सकतीं जितनी कि किताबें। लेकिन पहले हमें इस बात को समझना जरूरी है कि किस तरह की किताबें चाहिए और उन्हें किस तरह इस्तेमाल करना है। पढ़ना सिखाने के लिए छोटी–छोटी कहानियों की रोचक किताबें उपयोगी हो सकती हैं। ऐसी कोई भी कहानी जो साफ अक्षरों में हाथ से लिखी गई हो, चित्रों से सजाई गई हो (जिन्हें बच्चे भी बना सकते हैं) आपके संग्रह में शामिल हो सकती है। कहानी के साथ–साथ कविताओं, गीतों और बच्चों के खेल–गीतों को भी संग्रह में शामिल किया जा सकता है।

किताब पढ़कर सुनाना

किताब पढ़कर सुनाते समय इस बात का हमेशा ध्यान रखना चाहिए कि बच्चे ज्यादा न हों और आपके आस–पास गोले में बैठे हों। इस समय अन्य बच्चों को आप कोई और काम दे सकते हैं। आपके आस–पास बच्चे इस प्रकार बैठे हों कि उनमें से प्रत्येक को किताब के पन्ने आसानी से नज़र आने चाहिए। किताब को पढ़ने के साथ उसमें अपना कुछ जोड़ते जाना चाहिए। कुछ किताबों में कहानी या सामग्री खूब विस्तार से दी गई होती है। उसे वैसा का वैसा पढ़ने की बजाए छोटा करके अपने शब्दों में सुनाना चाहिए। इसके विपरीत यदि प्रत्येक पेज पर एक या दो पंक्तियाँ ही लिखी गई हों तो उसमें कुछ जोड़ा भी जा सकता है। किताबों के साथ काम करते समय यह भी जरूरी है कि दिए गए चित्रों को बच्चों को दिखाया जाए और उन पर विस्तार से बात की जाए।

कविता सुनाना एवं गाना

अनुमान लगाने के कौशल में पढ़ना एक महत्त्वपूर्ण साधन है। इस कौशल के विकास में कविता महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। यदि बच्चों को नियमित रूप से कविता सुनाई जाए तो वह भाषा की बुनियादी संरचना को समझने में मदद कर सकती है। कविताओं को याद रखना ज्यादा आसान होता है। इन्हें याद करने में बच्चों को विशेष कोशिश नहीं करनी पड़ती। बार–बार सुनने, मज़ा लेने, दोहराने से कविताएँ अपने आप याद हो जाती है। बच्चों को पढ़ने के लिए अलग तरह की कविताएँ चाहिए। इस तरह की कविताएँ अध्यापक स्वयं छाँट सकते हैं जिनमें भाषा का स्वाभाविक प्रयोग हो। ऐसी कविताएँ जो केवल नैतिक सीख देती हों, उनसे दूर रहना होगा।

एक काम यह भी किया जा सकता है कि ऐसे गीत जो बच्चे कूदते–फाँदते, रस्सी कूदते, गेंद से खेलते वक्त गाते हैं और जो पारम्परिक हैं, उन गीतों का लिखकर संग्रह तैयार कर सकते हैं। संग्रह एक या कई छोटी किताबों का रूप ले सकता है जिसमें हर पृष्ठ पर सुन्दर लिखाई और चित्र के साथ गीत लिखा गया हो। अध्यापक इस तरह की कई पुस्तकें तैयार कर सकते हैं। कविता की किताब को भी उसी तरह पढ़ा जाना चाहिए जैसे कि अन्य किताबों को, यानी बच्चों को अपने चारों ओर बैठाकर किताब को बीच में रखें। दो–तीन बार

पढ़ने के बाद किताब के बगैर कविता को सुनाया जाए और बच्चे भी साथ गाएँ। यदि कविता अच्छे स्तर की हुई तो बच्चे उसे जल्दी से याद कर लेंगे। और जब वे उसे किताब में पढ़ेंगे तो शब्दों का आसानी से अनुमान लगा सकेंगे। उदाहरण के लिए कुछ कविताएँ यहाँ दी जा रही हैं जिन्हें आप कक्षा में इस्तेमाल करें और ऐसी ही अन्य कविताएँ ढूँढ़ें और बच्चों के साथ करें।

हाँ जी हाँ जी ना जी ना

तुम कपड़े पहनते हो?
हाँ जी हाँ जी हाँ जी हाँ
तुम कपड़े धोते भी होगे?
ना जी ना जी ना जी ना
कपड़ों की हाँ, धोने की ना
ऐसे कैसे चले जहाँ?

तुम गंदा करते हो?
हाँ जी हाँ जी हाँ जी हाँ
तुम सफाई भी करते हो?
ना जी ना जी ना जी ना
गंदे की हाँ, सफाई की ना
ऐसे कैसे चले जहाँ?

तुम खाना खाते हो?
हाँ जी हाँ जी हाँ जी हाँ
तुम खाना पकाते भी हो?
ना जी ना जी ना जी ना
खाने की हाँ, पकाने की ना
ऐसे कैसे चले जहाँ?

(कमला भसीन चकमक, दिसम्बर, 1990)

अगर हमारे हाथ–पाँव न होते

अगर हमारे हाथ न होते
तो हम तुम क्या करते?
कैसे फूल तोड़ते, तितली
पकड़ पकड़ कर लाते?

अगर हमारे पाँव न होते
तो हम तुम क्या करते?
कैसे घर में चलते फिरते
कैसे बाहर जाते?

कैसे कलम उठाकर अपनी
कॉपी पर लिख पाते?
कैसे हम कमरे में मोटर
चाबीदार चलाते?

कैसे शाला पहुँच, वहाँ से
घर को वापिस आते?
कैसे हम दुकान तक जाकर
टॉफी बिस्कुट लाते?

हम बकरी की तरह वनों में
घास पत्तियाँ चरते।

हम घोघे की तरह रेंगते
फिरते डरते डरते।

(निरंकार देव सेवक चकमक, फरवरी, 1989)

टिप्पणी

बड़ा मजा आता

रसगुल्लों की खेती होती
बड़ा मजा आता।
चीनी सारी रेती होती
बड़ा मजा आता।
बाग लगे चमचम के होते
बड़ा मजा आता।
शरबत के बहते सब सोते
बड़ा मजा आता।
चारागाह हलुए का होता
बड़ा मजा आता।
क्या कोई हलुए को रोता
बड़ा मजा आता।

बरफी के होते सब पर्वत
बड़ा मजा आता
बरफी खाते, पीते शरबत
बड़ा मजा आता
लड्डू की सब खानें होतीं
बड़ा मजा आता
घर में दुनिया पेड़े बोती
बड़ा मजा आता
रुपये की दस किलो मिठाई
बड़ा मजा आता
होते रुपये पास अढ़ाई
बड़ा मजा आता

डॉ. श्रीप्रसाद चकमक मई, 1998

दुम में दम

पूँछ गिलहरी की झबरैली
कुत्ते की क्यों टेढ़ी,
लम्बे–घने बाल वाली
घोड़े की पूँछ घनेरी।
गज की लम्बी सूँड़, मगर
दुम होती कितनी छोटी,
कंगारू की दुम होती
लम्बी, भारी ओ' मोटी।
अपनी पूँछ से चतुर लोमड़ी
मुँह ढँककर सो जाती,
लम्बी पूँछ लंगूर की
जादू के करतब दिखलाती।
शेर की दुम के आखिर में
होते ब्रश जैसे बाल,
बाघ और चीते की दुम भी
करती खूब कमाल।

दुम अलबेली छिपकली की
खतरा दूर भगाती,
खुद शरीर से गिरकर
छिपकली की जान बचाती।
हाथ, पाँव, पर बन जाती दुम
समय देखती जैसा,
एक जानवर होता ऐसा
जिसकी दुम पर पैसा
दुम शरीर की करे हिफाज़त
दुम की महिमा न्यारी,
दुम दबाकर कभी न भागो
यह कायरता भारी।
सीधी, टेड़ी, लम्बी, छोटी
पूँछ बड़ी अनुपम है,
अवसरवादी दुम हिलाते
दुम में कितना दम है!

भगवती प्रसाद द्विवेदी चकमक जून, 1998

पाठगत प्रश्न

1. पढ़ना सिखाने की शुरूआत करना ज्यादा ठीक है–

   (क) फ्लैश कार्ड से (ख) चार्ट से

   (ग) लकड़ी के अक्षरों जैसी सामग्री से (घ) किताबों से

2. पढ़ना सिखाने के लिए परम्परागत विधियों के अतिरिक्त और क्या–क्या किया जा सकता है?

   .....

   .....

   .....

3. बच्चों को कविताओं के माध्यम से पढ़ना सिखाना क्यों आसान है?

   .....

   .....

   .....

5.4.4 कुछ गतिविधियाँ

वर्णमाला को पहचानना

वैसे तो हमारा विश्वास है कि रूचिपूर्ण सामग्री से गुजरते बच्चे स्वयं ही वर्णमाला पकड़ लेंगे। ध्वनि के संसार से भी बच्चे स्वयं अपनी भाशा की ध्वनियाँ पकड़ लेते हैं। फिर भी एक कविता या कहानी आधारित वर्णमाला संबंधी गतिविधियाँ लाभदायक हो सकती हैं। उदाहरण के लिए 'हाँ जी' कविता में यदि बच्चों से कहा जाए कि जहाँ 'ज' और 'च' आए हैं वहाँ गोला लगाए, फिर सभी कविताओं में से 'ज' और 'च' वाले शब्दों की सूची बनाए। इसके बाद स्वयं 'ज' व 'च' वाले नए शब्द लिखे। इसी प्रकार बच्चों से कहा जा सकता है कि वे इन कविताओं में आए 'ब' और 'व' वाले शब्दों की सूची बनाए। अब बोर्ड पर कुछ नए शब्द लिखिए और बच्चों को बारी–बारी बुलाकर नए–नए वर्ण पहचानने के लिए कहिए।

पढ़ा वह करो

जो बच्चे सीख चुके हैं, उन्हें यह भी सीखना जरूरी है कि पढ़ने का संबंध करने से है। इस गतिविधि में अध्यापक बोर्ड के पास चुपचाप खड़ा रहता है और बोलने के स्थान पर छोटे छोटे निर्देश बोर्ड पर लिखता जाता है। प्रत्येक बच्चे को उसकी क्रमसंख्या पता होनी चाहिए। बोर्ड पर निर्देश लिखते समय साथ में किसी बच्चे की क्रमसंख्या भी लिख दें।

टिप्पणी

जैसे– 'उठकर बाहर जाओ, एक पत्थर लाओ–10'। इस निर्देश का मतलब है कि 10 नंबर के बच्चे को उठकर बाहर जाना है और एक पत्थर लाना है। अब अगला निर्देश हो सकता है–'10 नंबर पत्थर लेकर उसे अपने दाहिने घुटने पर रखो।' धीरे–धीरे निर्देशों को और जटिल बनाते जाएँ। जटिल निर्देश इस तरह के हो सकते हैं कि बच्चा दीवार पर टँगा पोस्टर देखकर कोई खास चीज ढूँढ़े या अस्पताल का रास्ता बताए, या स्कूल के बाहर लगे पेड़ों की संख्या गिनकर बताए, आदि।

पिछला शब्द, अगला शब्द

इस गतिविधि के लिए बाल साहित्य की किताबें पर्याप्त संख्या में होना जरूरी हैं। किताबें बच्चों में इस तरह बाँटिए कि हर बच्चे को कोई ऐसी किताब मिले जिसे वह आसानी से पढ़ सके। बच्चों से कहिए कि वे किताब के किसी भी पन्ने को खोलें और दाहिना पेज देखें। क्या इस पेज के अंत में पूर्ण विराम आता है? यदि हाँ, तो कोई और पन्ना खोलें। अब पूरा दाहिना पन्ना चुपचाप पढ़ डालें। अंत तक पहुंचकर रुक जाएँ और अगला पन्ना न पलटें। प्रत्येक बच्चे से पूछिए कि वह अंदाज से बताए कि अगले पृष्ठ का पहला शब्द क्या होगा? जब वह अपना अनुमान बता दे तब उससे पन्ना पलटकर यह देखने के लिए कहिए कि अनुमान सही था कि नहीं? सही अनुमान पर बाकी बच्चे ताली बजाने की परंपरा डाल सकते हैं। जब सबकी बारी आ चुकी हो और सब बच्चे अगला पन्ना पलट चुके हों तो फिर पहले बच्चे से शुरू कीजिए। इस बार हर बच्चे को याददाश्त के आधार पर यह बताना है कि पिछले पेज का आखिरी शब्द क्या था?

पाठगत प्रश्न

1. पढ़ना सिखाने के लिए कोई दो नई गतिविधि सुझाइए।

.....

.....

.....

2. पढ़ना सीखने में गतिविधियाँ कैसे मदद करती हैं?

.....

.....

.....

5.5 पढ़ने–लिखने का आपसी रिश्ता

पढ़ने और लिखने को सामान्यतः दो भिन्न कौशल माना जाता है। यह समझा जाता है कि पढ़ना ''ग्रहण'' कौशल है अर्थात् लिखे हुए को पढ़कर अर्थग्रहण करना। इसी तरह लिखना

''उत्पादन'' कौशल है अर्थात् जो कुछ भी आप बताना चाहते हैं उसे लिखकर उत्पादित करना। अक्सर प्रारंभिक कक्षाओं में इन दोनों कौशलों का विकास क्रमबद्ध रूप से किया जाता है। पहले पढ़ना सिखाया जाता है फिर लिखना। लेकिन पढ़ने और लिखने को लेकर अब यह समझ बन रही है कि पढ़ना और लिखना दो भिन्न प्रक्रियाएँ नहीं हैं बल्कि एक–दूसरे से इस तरह से जुड़ी हुई हैं कि पढ़ने के बारे में बनी अवधारणा लिखने को भी प्रभावित करती है।

दोनों ही प्रक्रियाओं में ऐसी कई समानताएँ हैं जो इन्हें एक–दूसरे की पूरक बनाती हैं जैसे पढ़ना और लिखना दोनों ही सोद्देश्य होता है। पढ़ते समय पाठक अर्थ निर्मित करते चलता है इसी प्रकार लिखते समय भी लिखने वाला अर्थ का निर्माण करते चलता है। पढ़ते वक्त कई बार अपने अर्थ को संशोधित करते हैं, उसे दुबारा पढ़ते हैं। वैसे ही लिखते समय हम अपने लिखे हुए को संशोधित करते चलते हैं। पढ़ने और लिखने दोनों ही प्रक्रियाओं के अंत में हम एक अंतिम अर्थ का निर्माण करते हैं। उदाहरण के लिए, जब कोई बच्ची अपनी माँ को कैलेंडर में किसी तारीख पर निशान लगाकर यह लिखते देखती है कि ''गैस का सिलेंडर बदला' तो वह बच्ची सिर्फ़ लिखने की एक गतिविधि नहीं देख रही होती है। ज़ाहिर है कि लिखने की इस प्रक्रिया में पढ़ना भी शामिल है।

इस एक क्रियाकलाप में पढ़ने–लिखने से संबंधित बहुत–सी अवधारणाएँ और समझ समाहित हैं। गौर करने लायक बात यह है कि यह एक सार्थक गतिविधि है जो किसी भी घर में (जहाँ कोई पत्रिका या अखबार न भी आता हो) घट सकती है। शायद इस एक मौके से समझकर बच्ची खुद किसी खास तारीख पर निशान लगाकर कैलेंडर का इस्तेमाल करना चाहे। जैसे यह दिखाने के लिए कि उसके दादा–दादी घर आ रहे हैं, वह 22 अक्टूबर पर गोला लगाकर दो चेहरे बना दे। यह कर पाने के लिए शायद उसे बड़े भाई–बहन या माता–पिता की मदद लेनी पड़े। स्कूल में दाखिले से पहले के दौर में बच्चे ऐसे कितने ही रोज़मर्रा के क्रियाकलाप देखते हैं जो उन्हें लिखित भाषा के जरिए पढ़ने–लिखने से परिचित होने का मौका देते हैं।

पाठगत प्रश्न

1. पढ़ने एवं लिखने को दो भिन्न कौशल क्यों माना जाता है?

.....

.....

.....

2. पढ़ने एवं लिखने की प्रक्रियाओं में आपको क्या–क्या समानताएँ नज़र आती हैं?

.....

.....

.....

टिप्पणी

5.6 सारांश

पढ़ना एक सृजनात्मक कार्य है। पढ़ना केवल लिखे हुए को उच्चारित करना मात्र नहीं है अपितु पढ़ने में छपी सामग्री से अर्थ ग्रहण करना महत्त्वपूर्ण है। हम छपी हुई सामग्री में प्रत्येक हिस्से को देखते हुए नहीं पढ़ते हैं बल्कि सम्पूर्ण छवि बनाकर पढ़ते हैं। पढ़ने में अनुमान लगाने का कौशल महत्त्वपूर्ण है। स्कूलों में पढ़ना सिखाने के वर्तमान तरीके, हिज्जे कर–करके पढ़ना, नियमों को रटना, शब्द दर शब्द पढ़ना, पढ़ने में सटीकता व शुद्धता का आग्रह, गलतियों पर टोकना आदि खामियाँ हैं, ये तरीके पढ़ना सिखाने के बजाय उसे और बाधित करते हैं। जरूरी है कि बच्चों को पढ़ने के रोचक व संदर्भपूर्ण मौके उपलब्ध कराए जाएँ ताकि पढ़ना एक मजेदार प्रक्रिया बन जाए।

5.7 संदर्भ ग्रंथ/कुछ उपयोगी पुस्तकें

पाण्डे, लता (2008) *पढ़ने की दहलीज़ पर*, नई दिल्लीः एनसीईआरटी

पढ़ने की समझ, (2008), नई दिल्लीः एनसीईआरटी

जोशी, सुशील (1989), *बच्चे पढ़ क्यों नहीं पाते*, एकलव्य, स्रोत

5.8 अंत्य इकाई अभ्यास

1. इस इकाई में पढ़ना सिखाने के बारे में आपको कौनसी बातें मुख्य लगीं?
2. पढ़ना क्या है? स्पश्ट कीजिए और हम कब कहेंगे कि बच्चे को पढ़ना आ गया?
3. आपको क्या लगता है, बच्चों को पढ़ना सिखाने में कहानियों का उपयोग करना चाहिए? यदि हाँ तो एक उदाहरण द्वारा स्पष्ट कीजिए।
4. पढ़ने को आनन्ददायी बनाने के लिए क्या–क्या प्रयास किए जाने चाहिए?
5. पढ़ना सिखाने के लिए आप पाठ्यपुस्तक के अलावा और किन–किन सामग्रियों का प्रयोग करना चाहेंगे?
6. स्कूलों में प्रचलित पढ़ना सिखाने की विभिन्न पद्धतियों का विश्लेषण कीजिए।
7. भाषा को समग्रता में सीखना आसान है या टुकड़ों–टुकड़ों में? उदाहरण सहित अपने विचारों को पुष्ट कीजिए।

प्रदत्त कार्य (Asignment)

- अपनी कक्षा में पढ़ने का एक समृद्ध कोना बनाइए तथा बच्चों को उसके उपयोग के लिए प्रेरित कीजिए।

टिप्पणी

- बच्चों द्वारा खेल–खेल में गाए जाने वाले गीतों, कविताओं का एक संकलन तैयार कीजिए। साथ ही यह भी बताइए कि इस सामग्री का उपयोग पढ़ना सिखाने के लिए कैसे करेंगे?

टिप्पणी

इकाई 6 लिखना

संरचना

6.0 परिचय

6.1 अधिगम उद्देश्य

6.2 लिखना मतलब क्या?

6.3 लिखने की शुरुआत

6.3.1 परिचालन कुशलता

6.3.2 अक्षरों, शब्दों और वाक्यों का अभ्यास

6.4 अच्छे लेखन (लिखावट) का महत्त्व और इसके तत्त्व

6.4.1 पढ़ने योग्य और सुन्दर लिखाई

6.4.2 अच्छी लिखावट विकसित करने हेतु बच्चों की सहायता करना

6.4.3 हस्तलिपि (लिखावट) और व्यक्तित्व

6.4.4 डिस्लेक्सिया एवं अन्य अक्षमताओं (*Disabilities*) के सूचक के रूप में हस्तलिपि

6.5 अच्छे लेखन की विशेषताएँ

6.5.1 व्याकरण की दृष्टि से सही भाषा

6.5.2 संप्रेषण की भाषा– स्पष्टता एवं संक्षिप्तता

6.5.3 सरल बनाम आलंकारिक भाषा

6.6 प्राथमिक कक्षाओं में लेखन कौशलों का विकास

6.7 लेखन के उच्च प्रकार

6.8 सारांश

6.9 संदर्भ ग्रंथ/कुछ उपयोगी पुस्तकें

6.10 अंत्य इकाई अभ्यास

6.0 परिचय

पिछली इकाइयों में हम सुनने, बोलने, पढ़ने तथा लिखने की चारों भाषाई कुशलताओं के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध को जान चुके हैं। एक व्यक्ति में लिखने की कुशलता सबसे अन्त में

विकसित होती है तथापि यह अन्य तीन कुशलताओं से स्वतंत्र नहीं है। लिखना सीखते समय भाषा के दो कार्य अभिव्यक्ति और संप्रेषण बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। इस इकाई में हम बच्चों में अभिव्यक्ति और संप्रेशण के विकास और उनके द्वारा लिखना सीखने के बारे में बात करेंगे। इसी के साथ लिखना सिखाने के कुछ प्रभावी तरीकों के सुझाव भी दिए जायेंगे।

अध्यापन तभी प्रभावी होगा जब बच्चों के लिए इसका अनुभव अर्थपूर्ण होगा। इस मान्यता में छोटी कक्षाओं के लिए अक्षरों और व्याकरण के अध्यापन के प्रभाव भी सम्मिलित हैं और इसी के साथ उच्च कक्षाओं में लेखन के विभिन्न प्रकारों को पढ़ाना भी शामिल है। सीखने की प्रक्रिया व अर्थ को ध्यान में रखते हुए गलतियों में सुधार, लिखावट पर विशेष ध्यान, आलंकारिक भाषा का उपयोग सहित अनेक प्रचलित अभ्यासों पर चर्चा करेंगे।

6.1 अधिगम उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- लिखने का अर्थ और सुनने, बोलने तथा विचार करने के साथ इसका सम्बन्ध जान पाएँगे;
- बच्चों को लिखना सिखाने में अध्यापक की भूमिका पहचान पाएँगे;
- वे तरीके जो उच्च प्राथमिक स्तर पर लिखना सिखाने और साथ ही इसका कौशल विकसित करने में अपनाये जा सकते हैं के बारे में अपनी राय दे पाएँगे।

6.2 लिखना मतलब क्या?

भाषा सीखने में लिखना–सीखना सबसे कठिन लक्ष्यों में से एक है। इसका एक कारण यह है कि लिखने में एक साथ अनेक प्रकार के कौशलों का उपयोग करने की जरूरत होती है। लिखने के लिए सबसे पहले हममें अच्छी परिचालन कुशलता यानी कि उँगलियों के संतुलन व संचालन की कुशलता (**motor skills**) होनी चाहिए जो कि हमें पेन या पेन्सिल पकड़ने और मनचाही आकृति बनाने हेतु तैयार कर सके। इसके बाद हमें, लिखकर दूसरों तक अपनी बात पहुँचाने के लिए भाषा का उपयोग करने की कुशलता प्राप्त करनी होती है।

लिखना क्या है? लिखने का अर्थ माना जाता है, ऐसे चिह्न और आकृतियाँ बनाना जो कि दूसरे व्यक्ति द्वारा समझे जा सकें। हालाँकि यह परिभाषा सीधी सादी है किन्तु यह हमारे दैनिक जीवन में प्रयोग किये जाने वाले शब्दों के अर्थों में छिपी बारीकियों की ओर ध्यान नहीं देती। उदाहरण के लिए, यह परिभाषा अभिव्यक्ति और लिखने के बीच महत्त्वपूर्ण कड़ियों को व्यक्त नहीं करती। यदि कोई व्यक्ति एक ऐसा चित्र बनाता है जो कि दूसरे व्यक्ति द्वारा समझा जा सकता है फिर भी उसे हम भाषा नहीं कहते। यह परिभाषा बोलने और लिखने के बीच महत्त्वपूर्ण कड़ी को भी अनदेखा करती है।

बोलने और लिखने की क्रियाएँ बहुत ही अलग–अलग समय पर आरम्भ हुईं। ऐसा अनुमान लगाया जाता है मनुश्य ने भाषा बोलना लगभग दस लाख वर्ष पहले प्रारम्भ कर दिया था जबकि भाषा को लिखना लगभग पाँच हजार वर्ष पहले आरम्भ हुआ है। पृथ्वी के सभी समुदायों में बोलने की भाषा का जन्म लिखने की भाषा से बहुत पहले हुआ। कई समुदाय ऐसे भी हैं जिनके पास लिखने का कोई सिस्टम ही नहीं है। जैसे–जैसे हमारी सामाजिक और क्षेत्रीय सीमाओं का विकास होने लगा, मोटे रूप में इसी के साथ लिखने की भाषा का आरम्भ हुआ।

'लिखना' केवल एक प्रकार का माध्यम है जिसमें बोली गई बात को व्यक्त किया जा सकता है। यानी 'लिखना' एक नई भाषा को प्रस्तुत नहीं करता बल्कि यह केवल उसी भाषा को नए रूप में प्रस्तुत करता है। फिर भी, संप्रेषण के इन दो माध्यमों के बीच अन्तर है। पहला, लिखित शब्द बोले गए संदेश से अधिक स्थायी होते हैं। बोले गए शब्द तब तक ही रहते हैं जब तक हमारे बोलने की आवाज रहती है जबकि लिखित सामग्री तब तक बनी रहती है जब तक कि वह सामग्री रहती है। अर्थात बोले गए शब्द अमूर्त, अप्रत्यक्ष एवं अस्थायी होते हैं जबकि लिखित शब्द मूर्त, प्रत्यक्ष एवं स्थायी होते हैं। दूसरा, बोलते समय सुनने वाला अक्सर हमारे सामने होता है। इस प्रकार, हमारे संदेश की विषयवस्तु में शब्दों के अर्थ और साथ ही ऐसे हावभाव शामिल होते हैं जिनमें हमारी आवाजों की ध्वनि सम्बन्धी गुणवत्ता भी सम्मिलित होती है। भाषा के बोले गए रूप में किसी भी प्रकार की गलतफहमी की स्थिति में हम तुरंत ही अपने आपको (कथन को) ठीक कर सकते हैं किन्तु भाषा के लिखित रूप के साथ ऐसी सुविधा नहीं होती है। प्रसिद्ध साहित्यकार प्रेमचंद ने भी कहा है कि 'बोलने से जबान नहीं कटती है लेकिन लिख देने से हाथ कट जाते हैं।' सौभाग्य से, हमारे पास लिखते समय उससे कहीं अधिक समय भी होता है जितना कि हमारे पास बोलते समय होता है। इसलिए यदि हम चाहें तो हमारे पास वाक्यों में सुधार करने और उन्हें फिर से लिखने का भी अवसर होता है। अतः बोले जाने वाले वाक्य लिखित वाक्यों की तुलना में अपेक्षाकृत कम जटिल होते हैं।

भाषा लगातार बदलती व विकसित होती रहती है। किन्तु ये बदलाव लिखित भाषा की अपेक्षा बोलने की भाषा में जल्दी दिखाई देते हैं। लिखित भाषा अपना स्वरूप लम्बे समय तक बनाए रखती है और बहुत धीरे–धीरे बदलती है। बच्चों के द्वारा लिखना सीखने के संदर्भ में यह बिन्दु महत्त्वपूर्ण है। शुरू में, बच्चे के द्वारा लिखने के सभी प्रयास शब्द की ध्वनि और जिस तरह से शब्द बोले जाते हैं उससे प्रभावित होते हैं। यदि बोली गई ये ध्वनियाँ लिखने के स्वीकृत प्रकारों के साथ मेल नहीं खाती हैं तो इससे बालक द्वारा गलतियाँ करने की सम्भावना बढ़ जाती है। इस प्रकार ये गलतियाँ अक्सर सीखने की दिशा में बढ़े हुए कदम को दर्शाती हैं और इसलिए उन्हें उनके उचित संदर्भ में देखा जाना आवश्यक है।

पाठगत प्रश्न

1. लिखना केवल एक प्रकार का माध्यम है जो–

   (क) नई भाषा को प्रस्तुत करता है।

   (ख) उसी भाषा को नए रूप में प्रस्तुत करता है।

   (ग) लिखना सिखाता है।

   (घ) पढ़ना सिखाता है।

2. लिखने के लिए किसी व्यक्ति में किन क्षमताओं का होना आवश्यक है?

   .....

   .....

   .....

3. भाषा के बोले गए रूप और लिखे गए रूप में क्या अंतर है? इसमें कौन–सा रूप ज्यादा परिवर्तनशील तथा ज्यादा प्रमाणिक है?

   .....

   .....

   .....

4. किसी से एक अनुच्छेद को पढ़ने के लिए कहिए। उसके बाद उसे वह सब कुछ लिखने के लिए कहिए जो कि वह उस अनुच्छेद से समझ पाया है। देखिए कि उसने लिखने के दौरान किन–किन समस्याओं का सामना किया तथा क्या–क्या गलतियाँ कीं।

   .....

   .....

   .....

6.3 लिखने की शुरुआत

6.3.1 परिचालन कुशलता

लिखने में अनेक कौशलों में समन्वय की जरूरत होती है। एक बच्ची लिखना सीख सके, इसके पहले उसके द्वारा उन कौशलों में दक्षता प्राप्त करना आवश्यक है जो इससे जुड़े हैं। पहले बच्ची में परिचालन क्षमता/उँगलियों की पकड़ (**motor skills**) अच्छी तरह से विकसित होनी चाहिये। परिचालन कौशलों के विकास को प्रोत्साहित करने के लिए बच्चों

टिप्पणी

को ठोस वस्तुओं के साथ अन्तःक्रिया करानी चाहिए और उन्हें इन वस्तुओं को जैसा वे ठीक समझें उसी के अनुसार परिचालित करने देना चाहिए। वस्तुओं को पकड़ने और उनका प्रयोग करने से बच्चों की पकड़ विकसित होती है। चित्रकारी बच्चों में परिचालन कौशलों का विकास करने के अतिरिक्त उनका मनोरंजन भी करती है इसलिए बच्चों को चित्र (ड्राइंग) बनाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। बच्चों की चित्रकारी में आरम्भ में तो अर्थहीन लिखावट जैसे आकार बनते हैं जो धीरे–धीरे पहचानने योग्य विशेष आकारों और आकृतियों के रूप में विकसित हो जाते हैं। इसके अलावा एक बर्तन में पानी उड़ेलना, फूलों की माला बनाना, मिट्टी या गारे से आकृतियाँ बनाना जैसे खेल भी परिचालन सम्बन्धी कुशलताओं के विकास में सहायता करते हैं। बच्ची के घर का वातावरण उसे इस तरह के कामों के लिए पर्याप्त मौके देता है। इसलिए अध्यापक को बच्चों को इस तरह की गतिविधियों के मौके देने चाहिए।

6.3.2 अक्षरों, शब्दों और वाक्यों का अभ्यास

अमूमन यह समझा जाता है कि अक्षरों का बार–बार अभ्यास करने से वाक्यों को लिखना सीखने में सहायता मिलती है। यह बात एक सीमा तक सही है किन्तु यदि बच्चे अक्षरों को दोहराने के कठिन कार्य में लगे रहे तो लिखना सीखना आरम्भ करने से पहले ही लिखने के प्रति उनकी रुचि खत्म हो जायेगी। हालाँकि बच्चे को लिखित शब्दों से परिचित कराने में अलग–अलग अक्षर और वर्णमाला उपयोगी है किन्तु वे तब तक अर्थपूर्ण नहीं हो सकते जब तक कि शब्दों और वाक्यों के साथ उनके सम्बन्ध को स्पष्ट नहीं कर दिया जाए।

बच्चों को लिखना सिखाने में दो बातें बहुत महत्त्व रखती हैं – उनकी योग्यता एवं क्षमताओं का सम्मान करना और ऐसा आनन्ददायक वातावरण तैयार करना जिसमें वे सीख सकें। इस बात को समझना आवश्यक है कि बच्चे में भाषा सीखने की अपार एवं जन्मजात क्षमता होती है। वे सामाजिक अनुभवों के माध्यम से, जिनमें कि बोलना और सुनना शामिल है, स्वाभाविक रूप से अपनी मातृभाषा सीख लेते हैं। इसी तरह, लिखित सामग्री से जुड़े अर्थपूर्ण अनुभवों के माध्यम से अधिकांश लिखने के नियम भी ग्रहण कर लेते हैं। पढ़ाने के क्रम में हम अक्सर इस मान्यता के अन्तर्गत काम करते हैं कि बच्चों को हर चीज़ बताने की आवश्यकता होती है। उन्हें जब तक बताया नहीं जायेगा वे कुछ भी समझ नहीं पायेंगे। लेकिन ऐसा नहीं है। हमें इस प्रकार की मानसिकता से छुटकारा पाने की जरूरत है और बच्चों की क्षमताओं का सम्मान करने की जरूरत है। स्कूल आने से पहले बच्चों में एक विषेश लिखने की क्षमता भी होती है। यह एक आम बात है कि बच्चे मिट्टी, फर्श या काग़ज़ पर अलग–अलग किस्म के चिह्न व आकृतियाँ बनाकर अच्छी खासी कहानी सुना देते हैं। यह आकृतियाँ उनके लिए निरर्थक नहीं होती बल्कि अपनी बातचीत को लिखकर कहने की एक विशेष लिपि होती है। बच्चों को अपनी क्षमताओं का पूरा उपयोग करने का अवसर दिया जाना चाहिए। सीखने की प्रक्रिया, चित्र को पूरा करने के लिए टुकड़ों को एक साथ जोड़ने जैसा कार्य नहीं है बल्कि वास्तव में तो यह इससे उलटी प्रक्रिया है। सबसे पहले एक सम्पूर्ण चित्र आकार लेता है और फिर विशिष्ट चीजें अलग–अलग तरीके से

टिप्पणी

स्पष्ट होती चली जाती हैं। जब तक कि एक सार्थक, सम्पूर्ण उपलब्ध नहीं कराया जाता, छोटी विशिष्टताएँ, जैसे कि एक वर्णमाला के अलग–थलग अक्षर, कोई अर्थ नहीं रखते तथा यह उबाऊ भी होगा। इस तरह का प्रयास लिखने की समूची प्रक्रिया के प्रति टालने की प्रवृत्ति को ही बढ़ावा देगा। यह एक गंभीर समस्या है क्योंकि भाषा की अच्छी समझ और भाषा पर अधिकार प्राप्त करना स्कूलों में पढ़ाए जाने वाले लगभग सभी विषयों को समझने क ा
आधार बनाते हैं।

पाठगत प्रश्न

1. सीखने की प्रक्रिया कैसे संपन्न होती है?

   (क) चित्र को पूरा करने के लिए टुकड़ों को एक साथ जोड़ना

   (ख) पहले सम्पूर्ण चित्र का आकार लेना फिर विशिष्ट चीज़े स्पश्ट होना

   (ग) याद करके पढ़ना

   (घ) चित्र बनाकर सीखना

2. स्कूल आने से पहले बच्चों द्वारा बनाए गए चिह्न व आकृतियाँ आदि हमें उनके बारे में क्या बताते हैं?

   ....

   ....

   ....

3. परिचालन कुशलता का क्या तात्पर्य है? इसका विकास कैसे किया जा सकता है?

   ....

   ....

   ....

4. वर्णमाला से लिखना सिखाना शुरू करने में क्या समस्या है?

   ....

   ....

   ....

6.4 अच्छी लिखावट का महत्त्व और इसके तत्त्व

प्रायः लिखना सीखने के शुरुआत में ही हम बच्चों की लिखावट की गुणवत्ता पर ध्यान देने

लग जाते हैं। यह ठीक बात है कि बच्ची का हस्तलेखन पढ़ने योग्य हो लेकिन उससे ज्यादा महत्त्वपूर्ण है कि उसने जो लिखा है वह अर्थपूर्ण हो। बच्ची लिखे हुए को सुंदर ढंग से नकल कर सकती है, लेकिन क्या वह उसे समझती भी है?

6.4.1 पढ़ने योग्य और सुन्दर लिखाई

प्रारंभिक कक्षाओं में ही अध्यापक अच्छी लिखावट और सुगढ़ अक्षरों पर अपना ध्यान केन्द्रित करते हैं। लेकिन जरूरी यह है कि बच्चों का लिखा हुआ अर्थपूर्ण (सार्थक) हो। लेखन की सुंदरता इस बात में है कि वह कितना अर्थपूर्ण है? अच्छी लिखावट की जिस बात के लिए प्रशंसा की जाती है, वह है, कि वह पढ़ने में कितना आसान है। सुन्दर हस्तलिपि और भाषा की पकड़ के बीच कोई स्पष्ट सम्बन्ध नहीं है। यदि किसी व्यक्ति का हस्तलेखन अच्छा है तो जरूरी नहीं कि उसकी भाषाई क्षमता भी अधिक हो। इसी तरह किसी का हस्तलेखन खराब है तो जरूरी नहीं कि उसकी भाषाई क्षमता भी कम हो।

6.4.2 अच्छी लिखावट विकसित करने हेतु बच्चों की सहायता करना

अच्छी हस्तलिपि विकसित करने के लिए बच्चों की मदद, लिखने के लिए मौलिक रूप से आवश्यक कुछ बातों को उनमें विकसित करके की जा सकती है। जैसे कि अच्छी परिचालन कुशलता, चित्र–कल्पना, छड़–नियन्त्रण, पेन्सिल पकड़ना और विभिन्न कसरतों के द्वारा कंधों में स्थायित्व लाना। अक्षर विशेष लिखना सिखाते समय अध्यापक विभिन्न प्रकार के मनोरंजन के तरीके भी विकसित कर सकता है। उदाहरण के लिए, बच्चों को यह दिखाया जा सकता है कि अक्षर 'एस' (S) किस तरह साँप की आकृति जैसा होता है अथवा अक्षर 'क्यू' (Q) किस तरह गुब्बारे जैसा होता है। इसी प्रकार, हिन्दी में अक्षर 'ब' की मोटे पेट वाले एक व्यक्ति से तुलना की जा सकती है। और, इस तरह खेल अभ्यासों के माध्यम से लेखन के दोषपूर्ण पहलुओं में सुधार कराया जा सकता है। ये दोषपूर्ण पहलू इस प्रकार के हो सकते हैं : शब्दों के बीच पर्याप्त स्थान न छोड़ना, अक्षरों का आकार, इन्हें पंक्ति में न रखना इत्यादि। उदाहरण के लिए, अक्षर के आकार की समस्या में सुधार के लिए अध्यापक एक खास आकार के गोले बना सकता है और बच्चों से उन्हें कुछ अक्षरों से भरने के लिए कह सकता है।

6.4.3 हस्तलिपि (लिखावट) और व्यक्तित्व

कुछ अध्यापक यह मानते हैं कि बुरी लिखावट व्यक्तित्व में दोष लाती है। इसीलिए वे अक्सर बच्चों को अक्षरों को बार–बार सफाई व सुन्दरता से लिखने के उबाऊ काम में लगाए रहते हैं। हमें यह समझ लेना चाहिए कि जो गतिविधियाँ लिखावट में सुधार करने के अभिप्राय से चलाई जाती हैं वे बहुत कठिन, श्रमसाध्य और पूर्णतः अनुत्पादक होती हैं। हस्तलिपि में सुधार लाने से व्यक्तित्व में सुधार नहीं आता क्योंकि हस्तलिपि व्यक्तित्व को प्रभावित नहीं करती है। हस्तलिपि में सुधार लाने के उबाऊ प्रयत्नों के कारण बच्चे लिखने के कार्य में रुचि खो देते हैं। हमें ध्यान उन गतिविधियों पर केन्द्रित करना चाहिये जो कि लिखने की क्रिया को एक अर्थपूर्ण और रुचिपूर्ण प्रवृत्ति बनाती है।

टिप्पणी

6.4.4 डिस्लेक्सिया एवं अन्य अक्षमताओं (disabilities) के सूचक के रूप में हस्तलिपि

एक बालक की हस्तलिपि उसके बारे में जानकारी उपलब्ध करा सकती है। यह संभव है कि बालक लिखने में अनेक कठिनाइयों का सामना कर रहा हो। इनमें से कुछ जैसे कि डिस्लेक्सिया, प्राणिशास्त्र आधारित स्थितियाँ हैं। डिस्लेक्सिया एक ऐसी स्थिति है जिसमें कि एक व्यक्ति अपने मस्तिष्क की अलग तरह की रचना के कारण सूचनाओं को अलग तरह से क्रियान्वित करता है। डिस्लेक्सिया से पीड़ित व्यक्ति सदैव चित्र को पूर्ण रूप में देखता है न कि इसकी रचना करने वाले हिस्सों की शृंखला अथवा अनुक्रम में। यह स्थिति लिखने में समस्याएँ पैदा करती है। ऐसी अवस्था वाले व्यक्ति द्वारा लिखी गई हस्तलिपि आमतौर पर पढ़ने योग्य नहीं होती, उसके अक्षरों के आकार अनियमित होते हैं और उन्हीं शब्दों अथवा अक्षरों को लिखने में असम्बद्धता पाई जाती है। इस प्रकार बालक अक्षरों और शब्दों को लिखने में गलती करता है किन्तु हर बार एक जैसी गलती नहीं होती। उसे अन्य जगहों से लिखित सामग्री की नकल करने में भी कठिनाई महसूस हो सकती है। बालक द्वारा लिखने में अपनायी गई शारीरिक मुद्रा एक अतिरिक्त कारक है।

डिस्लेक्सिया के अन्य कई लक्षण उन लिखने के कमजोर कौशलों के साथ जुड़े होते हैं जैसे कि डिस्प्राक्सिया (कमजोर परिचालन कुशलता एवं आयोजन), चित्र कल्पना सम्बन्धी कौशलों में कमी इत्यादि। इन लक्षणों के दिखाई देने के बावजूद हम यह नहीं मान सकते कि यह स्थिति एक बीमारी होने का संकेत है। ये मात्र कुछ संकेत हैं, निर्णायक आधार नहीं। अतएव, यह ज्ञात करने के लिए कि क्या बालक इस स्थिति में है, जिसके कारण उसे विशेष सहायता की आवश्यकता है तो ऐसी स्थिति में विशेषज्ञों की सहायता लेना जरूरी हो जाता है, जैसेकि व्यावसायिक चिकित्सक (ऑक्युपेशनल थेरेपिस्ट)।

पाठगत प्रश्न

1. डिस्लेक्सिया से पीड़ित व्यक्ति–

   (क) सदैव चित्र को पूर्ण रूप में देखता है।

   (ख) चित्र नहीं देख सकता।

   (ग) चित्र की रचना करने वाले हिस्सों की शृंखला या अनुक्रम में।

   (घ) चित्र नहीं बना सकता।

2. लिखने की क्रिया पर हाथ की मुद्रा और पेन्सिल की पकड़ के प्रभाव का विश्लेषण कीजिए।

   ....

   ....

   ....

टिप्पणी

3. ऐसे तरीकों पर विचार कीजिए जिनसे अक्षरों को एक अलग रूप में दिखाते हुए अक्षर लेखन को रुचिपूर्ण बनाया जा सके। ऐसे लेखन अभ्यास तैयार कीजिए जो कि हस्तलिपि की समस्याओं को दूर करने में मदद करें।

.....

.....

.....

4. मान लीजिए आप की कक्षा में एक ऐसी बच्ची है जो टेढ़े–मेढ़े शब्द लिखती है और उसकी लिखावट समझ में नहीं आती है। आप क्या करेंगे? समझाइए।

.....

.....

.....

6.5 अच्छे लेखन (लिखावट) की विशेषताएँ

यह अपेक्षा की जाती है कि हमारी लिखित भाषा वर्त्तनी (स्पेलिंग) और व्याकरण के कुछ नियमों के अनुरूप हो। बोलते समय यदि सुनने वाला हमें गलत तरीके से समझ रहा है तो अर्थ को स्पष्ट करने का अवसर हमारे पास होता है। लेकिन लिखित संप्रेषण में इस प्रकार का कोई अवसर उपलब्ध नहीं होता। किन्तु मानकों में यह अन्तर उस बालक के सामने कुछ समस्याएँ खड़ी कर देता है जो लिखना सीख रहा है क्योंकि बोले जाने वाली भाषा लिखना सीखने हेतु आधार का काम करती है। लिखित भाषा के वे लक्षण जो कि बोलने वाली भाषा में नहीं होते, उन पर यदि आरम्भ से ही जोर दिया जाने लगे तो भाषा को सीखना एक समस्यापूर्ण विषय बन जाता है।

भाषा सम्बन्धी चारों कौशलों में 'लिखना' सबसे मुश्किल कौशल है। इसके लिए शब्दकोश, व्याकरण और वाक्य–रचना पर अधिकार प्राप्त करने की जरूरत होती है। अर्थपूर्णता अच्छे लेखन का एक महत्त्वपूर्ण लक्षण है। लिखने की क्रिया को अर्थ बनाने की क्रिया एवं असंगठित विचारों में सम्बद्धता लाने की क्रिया के रूप में भी वर्णित किया जा सकता है। लिखने का उद्देश्य अर्थपूर्ण अभिव्यक्ति और संप्रेषण है। ये उद्देश्य अक्सर कक्षा में 'सही' लिखने पर जोर देने के पीछे छिप जाते हैं।

6.5.1 व्याकरण की दृष्टि से सही भाषा

बच्चे जब भी कुछ लिखते हैं तो अक्सर अध्यापक उसमें वर्त्तनी और व्याकरण की गलतियाँ निकालने लगते हैं। उन्हें सोचना चाहिए कि बोलते व लिखते वक्त ऐसी गलती करना स्वाभाविक है। हममें से कोई भी शुरू से ही न तो शुद्ध–शुद्ध बोलता है और न ही

टिप्पणी

शुद्ध–शुद्ध लिखता है। खासकर जब जटिल विचारों को लिखना हो तो गलती होने की संभावना ज्यादा होती है।

ध्वनि के स्तर पर यह स्वाभाविक है कि शुरू–शुरू में अलग–अलग बच्चे अलग–अलग तरह से लिखेंगे। एक ही शब्द अलग–अलग बच्चों के सामाजिक परिवेश में अलग–अलग तरीकों से बोला जाता है। उदाहरण के लिए यह संभव है कि किसी समुदाय में 'सक' और 'शक' में कोई अंतर न हो। ऐसे बच्चे स्वाभाविक रूप से शुरुआत में 'शाप' या 'शांति' को 'साप' या 'सांति' लिखेंगे। इसे त्रुटि न मानकर सीखने की सीढ़ी का एक हिस्सा मानना चाहिए। इसी तरह के उदाहरण हम वाक्य के स्तर से भी ले सकते हैं। हिन्दी बोलने वाले कई समुदायों में क्रिया में लिंग भेद नहीं किया जाता है। यदि हम बच्चों और उनके माता–पिता के सामने बार–बार ऐसी ही गलतियों पर ज़ोर देंगे तो वे दोनों ही निराश हो जाएँगे। इसीलिए ऐसी परिस्थितियों में अक्सर हम देखते हैं कि बच्चे स्कूल छोड़ देते हैं।

बच्चों को सही वर्त्तनी व सही व्याकरण सिखाने के लिए उन्हें अधिक से अधिक रोचक व चुनौतीपूर्ण सामग्री पढ़ने के लिए दी जानी चाहिए और निरंतर लिखने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

शुद्ध वर्तनी और व्याकरण अपने आपमें कोई सार्थक लक्ष्य नहीं है। सार्थक लक्ष्य है– प्रभावी, रोचक एवं संतोषप्रद संप्रेषण।

6.5.2 संप्रेषण की भाषा– स्पष्टता एवं संक्षिप्तता

जब भी हम कुछ लिखते हैं तो यही सोचकर लिखते हैं कि इसे कोई पढ़ेगा, चाहे वह पढ़ने वाले हम खुद ही क्यों न हों। इसलिए हमारे लिखने के तरीके में, उसकी शैली, व्याकरण व शब्द–चयन में, पढ़ने वाले व्यक्ति या समूह के अनुसार बदलाव आते हैं। इस बात को ध्यान में रखते हुए कक्षा में कई ऐसी गतिविधियाँ की जा सकती हैं जिनसे बच्चे पाठक के प्रति संवेदनशील हो जाएँ। किसी पाठ–विशेष को लेकर ऐसे प्रश्न बनाए जा सकते हैं जिनके मूल में यह निहित रहे कि बच्चे सुनने वाले के बारे में सोचें। इसी प्रकार बच्चों को अलग–अलग पाठकों के लिए लिखने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।

लिखने में स्पष्टता और संक्षिप्तता जरूरी हैं क्योंकि इसी से पाठक को पता चलता है कि लिखने वाले का अर्थ अथवा अभिप्राय क्या है। स्पष्ट और संक्षिप्त लेखन के लिए बच्चों को केवल लेखकों के रूप में ही अनुभव की आवश्यकता नहीं होती अपितु पाठकों के रूप में भी उन्हें इसकी जरूरत होती है। पढ़ने से उन्हें उन विभिन्न पद्धतियों का पता चलता है जो कि लिखने वालों के द्वारा अपने विचारों को पाठकों तक पहुँचाने में प्रयोग किए जाते हैं।

संक्षिप्त और स्पष्ट लेखन के लिए अग्रिम रूप से योजना बनाने की आवश्यकता होती है। व्यक्ति द्वारा स्वयं ही लिखित सामग्री का संपादन करना चाहिए।

टिप्पणी

6.5.3 सरल बनाम आलंकारिक भाषा

यह एक आम मान्यता है कि अच्छा लेखन वह कहलाता है जिसमें विस्तृत शब्दों और वाक्यों को साथ लेकर आलंकारिक भाषा का प्रयोग किया जाए। किन्तु यह पाठकों को कुछ बताने के स्थान पर उनमें भ्रम उत्पन्न करे तो इसका उददेश्य ही खो जाता है। जो लेखन इसे पढ़ने या सुनने वाले तक अपने संदेश को स्पष्ट रूप से पहुँचाता है वही अच्छा लेखन कहलाता है।

अतएव बच्चों को लिखने में ऐसी भाषा का प्रयोग करने हेतु प्रोत्साहित किया जाना चाहिए जिसमें उनका अभिप्राय स्पष्ट हो सके।

महत्त्वपूर्ण बात, स्वयं को अभिव्यक्त करने की योग्यता है, न कि वैसा प्रभाव पैदा करना है जो कि एक व्यक्ति अपने लिखने के फलस्वरूप दूसरों पर पैदा करना चाहता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि केवल सरल लेखन ही अच्छा लेखन होता है। जैसे–जैसे बच्चों का शब्द ज्ञान पढ़ने अथवा भाषा से जुड़े अन्य अनुभवों के माध्यम से विकसित होने लगता है वैसे–वैसे वे कुछ आलंकारिक शब्दों का प्रयोग करने लगते हैं। बच्चों द्वारा किये जाने वाले ऐसे सार्थक प्रयासों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। एक अच्छा शब्द ज्ञान (शब्दकोष) जो व्यक्ति को स्वयं की अभिव्यक्ति हेतु अधिक विकल्प और स्वतंत्रता देता है, वह बुरी चीज नहीं होता। फिर भी अपनी बात को सरलता से कहने को प्राथमिकता दी जानी चाहिये। इसी के साथ, बच्चों को सरल और स्पष्ट लेखन के उदाहरण दिये जाने चाहिए। ईमानदारी से किया गया सरल लेखन सदैव आलंकारिक और अभिमानपूर्ण लेखन से ऊपर यानी उससे श्रेष्ठ होता है।

पाठगत प्रश्न

1. लिखने का उद्देश्य क्या है?

   (क) बोलकर लिखना (ख) अभिव्यक्ति

   (ग) सही लिखना (घ) अर्थपूर्ण अभिव्यक्ति एवं संप्रेशण

2. अच्छे लेखन की क्या–क्या विशेषताएँ हैं?

   .....

   .....

   .....

3. सार्थक लेखन ज्यादा महत्त्वपूर्ण है या शुद्ध लेखन? कारण सहित उत्तर दीजिए।

   .....

   .....

   .....

टिप्पणी

4. लिखना सीखने की शुरुआत में बच्चे वर्त्तनी व व्याकरण संबंधी गलतियाँ क्यों करते हैं?

.....

.....

.....

5. ऐसी गतिविधि के बारे में सोचें जिसमें बच्चों की पसंद की पुस्तक का उपयोग अच्छे लेखन के गुणों पर जोर देने हेतु किया जा सके।

.....

.....

.....

6.6 प्राथमिक कक्षाओं में लेखन कौशलों का विकास

प्राथमिक कक्षाओं में लेखन का विकास भाषा सम्बन्धी तीन अन्य कुशलताओं– सुनना, बोलना और पढ़ना द्वारा बनाई गई नींव पर निर्मित होगा। यह भी समझना जरूरी है कि बच्चे तभी प्रभावी रूप से लिखना सीखेंगे जब लिखने की क्रिया अर्थपूर्ण होगी तथा जो लिखा जा रहा है वह संदर्भ के साथ जुड़ा हुआ और बच्चों के लिए आनन्ददायक हो। इसके लिए बच्चों को समूह में कुछ गतिविधियाँ करवाई जा सकती हैं। इस संदर्भ में जो गतिविधियाँ नीचे बताई जा रही हैं वे केवल सुझाव हैं, और ये संभावित अथवा उपयुक्त प्रवृतियों का छोटा–सा हिस्सा हैं–

1. **चित्र बनाना**– इसमें बच्चों के सम्मुख कुछ पात्रों अथवा वस्तुओं वाले एक चित्र को प्रस्तुत किया जाता है और उन्हें इसके बारे में लिखने के लिए कहा जाता है। इस लेखन में विभिन्न प्रकार की रचनाओं को शामिल किया जा सकता है। उन्हें चित्र के आधार पर एक कहानी लिखने, चित्र का वर्णन करने, पात्रों के बीच संवाद लिखने, चित्र में रिक्त स्थान को भरने या फिर चित्र के बारे में लिखने के लिए कहा जा सकता है। जब उन्हें चित्रों की एक शृंखला उपलब्ध कराई जाय तो उन्हें इन चित्रों में जो कहानी दिखाई दे रही है उसे शब्दों में व्यक्त करने हेतु कहा जा सकता है।

2. **दिए गए रेखा–चित्र से कहानियाँ बनाना**– बच्चों को शब्दों अथवा शब्द–युग्मों की एक शृंखला के रूप में एक कहानी के लिए मोटा सा खाका दिया जा सकता है और इसके बाद उन्हें स्वयं ही इस पर एक कहानी लिखने के लिए कहा जा सकता है।

3. बच्चों को उस बारे में लिखने के लिए कहा जा सकता है जिसमें वे सामान्यतः बहुत रुचि रखते हैं अथवा जिसके बारे में वे बहुत बात करते हैं। इससे केवल लेखन कुशलता विकसित करने में ही मदद नहीं मिलेगी बल्कि सीखने की क्रिया को आगे बढ़ाने के लिए अध्यापक को अधिक तकनीकों की ओर ले जाने में भी सहायता मिलेगी।

टिप्पणी

4. **कहानी को आगे बढ़ाना**– बच्चों को एक कहानी का आरम्भ बताया जा सकता है और फिर उन्हें सोचकर उसे आगे बढ़ाने के लिए कहा जा सकता है।

5. **श्रुतलेख (डिक्टेशन)**– अध्यापक कुछ शब्दों को जोर से बोल सकता है और बच्चों से उन्हें लिखने के लिए यह देखने हेतु कह सकता है कि क्या उन्होंने बोली गई ध्वनियों और उनके लिखित रूप के बीच के सम्पर्क सूत्र को समझ लिया है।

6. **अन्तिम अक्षर प्रथम**– बच्चों को एक समूह में बैठाया जा सकता है और शब्दों को एक–एक करके इस तरह लिखने के लिए कहा जा सकता है की जो वे लिखते हैं उसका पहला अक्षर शब्द का आखिरी अक्षर होना चाहिए जो कि पहले आया था। यदि कोई ऐसा तरीका है जिससे यह जाना जा सके कि किसने कौनसा शब्द लिखा तो फिर अध्यापक कठिनाइयों और क्षमताओं को जानने में सक्षम हो सकेगा।

7. अध्यापक, बच्चों को उनकी रुचि के किसी विषय पर बात करने की अनुमति दे सकता है और जो वे कहते हैं उसे बच्चों के सामने ही लिख सकता है। इससे लिखने का संप्रेषण सम्बन्धी उद्देश्य स्पष्ट होगा और बोलने तथा लिखने के बीच का सम्बन्ध भी स्पष्ट हो सकेगा।

8. **लयात्मक शब्द**– बच्चों को ऐसे शब्द बताने के लिए कहा जा सकता है जो कि किसी वाक्यांश को कवितामय बनाते हों अथवा दिए गए वाक्यांश में आपस में ध्वनि–साम्य रखते हों।

बच्चों को लिखना सिखाते समय अध्यापक द्वारा उन्हें अपने स्वयं के विचारों को प्रकट करने का अवसर अवश्य ही दिया जाना चाहिए। तथा बच्चों को ऐसे विशयों पर निबंध लिखने के लिए नहीं दिया जाना चाहिए जिसे उन्हें रटकर लिखना पड़े। यदि बच्चों को दिया गया कार्य उनके जीवन से जुड़ा हुआ होगा तो वे अधिक लिखेंगे।

पाठगत प्रश्न

1. बच्चों को लिखना सिखाते समय अध्यापक को क्या करना चाहिए?

   (क) रटकर लिखने वाले विषय देना चाहिए।

   (ख) वर्णमाला लिखने के लिए देना चाहिए।

   (ग) स्वयं के विचार लिखने का मौका देना चाहिए।

   (घ) एक ही अक्षर को असंख्य बार लिखने को देना चाहिए।

2. लयात्मक शब्द लिखना सिखाने में किस प्रकार मददगार है? स्पश्ट कीजिए।

   .....

   .....

   .....

3. प्राथमिक कक्षाओं में लिखना सिखाने के लिए यहाँ सुझाई गई गतिविधियों को कक्षा में बच्चों के साथ करके देखिए।

.....

.....

.....

4. लिखना सिखाने में कहानी के माध्यम से क्या–क्या गतिविधियाँ करवाई जा सकती हैं?

.....

.....

.....

6.7 लेखन के उच्च प्रकार

लिखने के दो मुख्य उद्देश्यों– अभिव्यक्ति और संप्रेषण के विकास के लिए लेखन के उच्च प्रकारों– अनुच्छेद (पैराग्राफ) लेखन, पत्र लेखन, निबन्ध लेखन, कहानी लेखन और कविता लेखन का स्कूलों में अभ्यास कराया जाता है।

अनुच्छेद लेखन

इसके अन्तर्गत बच्चों को एक विषय देकर उन्हें इस पर लिखने के लिए कहा जाता है। छोटे बच्चों की उभरती लेखन कुशलता को विकसित करने हेतु अनुच्छेद लेखन एक अच्छा अभ्यास है। यह उन्हें विषय से सम्बन्धित बातों को लिखने के लिए प्रोत्साहित करता है। यह निबन्ध लेखन जैसे बाद वाले कौशलों के लिए अच्छा अभ्यास है। बच्चों को यह सलाह दी जा सकती है कि वे अपने जीवन से संबंधित बातों के बारे में लिखें। ये अनुच्छेद बालक की आयु और विषय की समझ के अनुसार छोटे या बड़े हो सकते हैं।

निबन्ध लेखन

'निबन्ध' अंग्रेजी के 'एस्से' (Essay) शब्द के हिन्दी रूपान्तर के रूप में प्रयुक्त होता है। जैसा कि नाम से ही स्पश्ट है निबन्ध एक ऐसी रचना होती है जो कि अनेक विचारों को क्रमबद्ध तरीके से बाँधती या जोड़ती है। निबन्ध मूलतः दो प्रकार के होते हैं : विचारात्मक एवं भावनात्मक। निबन्ध के कई भाग होते हैं जैसेकि भूमिका, इसके बाद मुख्य भाग और इसके बाद निश्कर्श। इस विभाजन से पता चलता है कि एक निबन्ध से विचारों की आसान धारा प्रतिबिम्बित होनी चाहिए। ये विचार एक विषय से सम्बन्धित होने चाहिये और एक तार्किक तरीके से प्रवाहमान होने चाहिए। लेखक द्वारा स्पष्टता और अनवरतता के साथ विषय को आगे बढ़ाया जाना चाहिए। अनुच्छेद के विपरीत, निबन्ध में एक विषय विशेष पर गहराई से और विस्तार से चर्चा की जानी होती है।

टिप्पणी

निबन्धों की गुणवत्ता के बारे में चिन्ता करते हुए अध्यापकगण कभी–कभी बच्चों को स्वयं निबन्ध लिखा देते हैं और छात्रों से केवल याद करने और लिखने की अपेक्षा करते हैं। यह किसी विषय पर व्यक्ति द्वारा स्वयं को प्रभावी तरीके से अभिव्यक्त करने की क्षमता विकसित करने के उद्देश्य को पूर्णतः समाप्त कर देता है। अतः निबन्धों के मामले में बच्चों के अपने विचारों और अनुभवों को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया जाना जरूरी है।

पत्र लेखन

परम्परानुसार, पत्र दूर रहने वाले लोगों तक संदेश पहुँचाने के लिए लिखे जाते रहे हैं। निबन्धों के विपरीत, पत्रों का एक बहुत ही विशिष्ट संप्रेषणीय उद्देश्य होता है। इसलिए इनमें मुद्दों अथवा बिन्दुओं पर विस्तार से कहने और तार्किक निरन्तरता से लिखने की आवश्यकता नहीं होती, जैसा कि निबन्धों के मामले में पाया जाता है। इसके स्थान पर, अपनी बात संप्रेषित करने के लिए इनमें लिखने के एक खास कौशल अथवा दक्षता की जरूरत होती है। पत्र लिखने वाले एवं पाने वाले के आपसी संबंधों के अनुसार पत्र–लेखन की शैली बदलती रहती है। पत्र लेखक को यह समझने की आवश्यकता होती है कि पत्र प्राप्त करने वाला उसमें लिखे गए संदेष पर कैसी प्रतिक्रिया करेगा।

कहानी लेखन

यह एक ऐसा अभ्यास है जिसे उस समय आरंभ किया जा सकता है जब बच्चे लिखना आरम्भ करते हैं। यह उनकी कल्पना एवं उनके लेखन कौशल के विकास में सहायता करती है। यह एक ऐसी विधा है जिसे किसी भी आयु में सम्पन्न किया जा सकता है। बड़े बच्चों के लिए इस अभ्यास का उद्देश्य मोटे रूप में वही होता है जो कि बच्चों के लिए होता है लेकिन इस कार्य में भाषा को सीखने के स्थान पर विचार कौशलों और कल्पनाशीलता के गुणों को प्रोत्साहित करने पर जोर दिया जाता है। जैसे–जैसे बच्चे बड़े होने लगते हैं उनसे मुद्दों को अलग दृष्टि से देखने, समस्या के समाधान में सक्रिय रूप से भाग लेने और लेखन के सौन्दर्यात्मक गुणों को आत्मसात करने या समझने की अपेक्षा की जाती है। ये कौशल साहित्य के विभिन्न रूपों के साथ निकट सम्पर्क से विकसित होते हैं। इस समय तक, बच्चे साहित्य के विभिन्न रूपों से परिचित हो जाते हैं जैसे कि कविताएँ, कहानियाँ और नाटक। इस प्रकार का ज्ञान अथवा अनुभव, विचार करने और कहानी लिखने के कौशलों को विकसित करने में सहायता पहुँचाता है। दूसरी ओर, कहानी लेखन एक ऐसी प्रवृत्ति है जो कि बच्चों को उनकी कल्पना का उपयोग करने का अवसर देती है और यह मनोरंजक भी है। इससे साहित्य और भाषा में रुचि पैदा होती है।

कहानी लेखन के माध्यम से लिखने और विचार करने की क्रियाओं को विकसित किया जा सकता है। इसके लिए बच्चों से कहानियों के वैकल्पिक अन्त बताने, एक गंभीर अथवा महत्त्वपूर्ण बिन्दु से कहानी को आगे बढ़ाने, चरित्र विशेष के दृष्टिकोण से कहानी लिखने आदि के लिए कहा जा सकता है।

टिप्पणी

कविता लेखन

छोटी कक्षाओं में पढ़ने वाले बच्चे केवल उन्हीं कविताओं को जानते हैं जिनमें गायन वाले शब्द होते हैं। ये गायन वाले शब्द कविता में रुचि पैदा करने और बच्चों को शब्दों के प्रभाव का अनुभव कराने में सहायता करते हैं। गायन वाले शब्दों के कारण बच्चे उसे आसानी से पढ़ लेते हैं। अतः छोटे बच्चों के साथ छोटी कविताएँ बनाने की प्रवृत्ति आरम्भ की जा सकती है। बच्चों से उनके साथियों के साथ मिलकर समूह में अथवा अकेले ही कविताएँ बनाने के लिए कहा जा सकता है। यह एक मनोरंजक गतिविधि हो सकती है।

उच्चतर कक्षाओं में कविता लेखन अधिक जटिल हो जाता है क्योंकि उन बच्चों की इस बारे में समझ कि कविता में क्या होता है, अधिक परिपक्व और गहरी होती है। कविता लेखन को बच्चों में सौंदर्य बोध की भावना विकसित करने से भी जोड़कर देखा और समझा जा सकता है।

पाठगत प्रश्न

1. छोटी कक्षाओं में बच्चे किस तरह की कविताओं को जानते हैं?

   (क) कठिन शब्दों वाली कविता (ख) सोचने वाली कविता

   (ग) गायन वाले शब्दों वाली कविता (घ) छोटी कविता

2. पत्र लेखन निबंध लेखन से कैसे अलग है?

   ....

   ....

   ....

3. 'बच्चों की जिज्ञासा' विषय पर एक निबन्ध व एक अनुच्छेद लिखिए।

   ....

   ....

   ....

4. अक्सर स्कूलों में निबन्ध व पत्र अध्यापक स्वयं ही लिखवा देते हैं और बच्चों को उसे याद करने के लिए कह देते हैं। क्या ऐसा करना उचित है? कारण सहित अपनी बात स्पष्ट कीजिए।

   ....

   ....

   ....

टिप्पणी

6.8 सारांश

लिखना एक भाषाई कौशल है। लेखन कार्य के अन्तर्गत ऐसे भाषाई निशान बनाने का कार्य किया जाता है जिन्हें किसी व्यक्ति के द्वारा पढ़ा तथा समझा जा सकता हो। बच्चों को लिखना सिखाते समय यह सुनिश्चित करना महत्त्वपूर्ण है कि उनमें कुछ आवश्यक योग्यताएँ विकसित हुई हैं। जैसे– अच्छी परिचालन क्षमता विकास, मुद्रा (बैठकर कार्य करने में शारीरिक स्थिति) और शारीरिक विकास तथा स्वयं को स्पष्ट रूप में अभिव्यक्त करने हेतु बोली जाने वाली भाषा का प्रयोग करने की क्षमता आदि। बालक द्वारा लिखने की तैयारी भी समान रूप से महत्त्वपूर्ण है जो कि लेखन सामग्री को प्रयोग करने हेतु किए गए उनके प्रयासों से प्रकट होती है।

यह याद रखना आवश्यक है कि लिखना आरम्भ करने वाली बच्ची के लिये लेखन अर्थपूर्ण होना चाहिए। लिखना आरंभ करते समय बच्चे जो गलतियाँ करते हैं वे बोली जाने वाली और लिखी जाने वाली भाषाओं में जो अन्तर है उनके कारण होती हैं। चूँकि लिखना एक कौशल है जो कि पढ़ने, बोलने और सुनने की अन्य भाषा कुशलताओं के विकास के साथ विकसित होता है, अतः इसे इस तरह से प्रोन्नत किया जाना चाहिए कि वे सभी एक–दूसरे के पूरक हो सकें।

हस्तलिपि बालक के व्यक्तित्व के बारे में जानकारी दे सकती है किन्तु बुरी हस्तलिपि अपने आप में कुछ भी अवांछनीय नहीं सुझाती। बच्चों की हस्तलिपि में सुधार करने के लिए विभिन्न तरीकों का प्रयोग करते हुए उनकी मदद की जा सकती है। लिखने में कुछ आवश्यक (वांछनीय) गुणों को भी महत्त्व दिया जाना चाहिए जैसे कि स्पष्टता, संक्षिप्तता और सरलता। चूँकि लिखी जाने वाली भाषा व बोली जाने वाली भाषा में अंतर होता है, इसलिए लिखित सामग्री बच्चों के समक्ष अधिकाधिक रूप से प्रस्तुत करते हुए उनके लेखन कौशल को विकसित करने में उनकी सहायता की जा सकती है। इसी तरह के उपायों का उपयोग भाषा में व्याकरण सम्बन्धी त्रुटि सुधार हेतु भी किया जा सकता है।

लेखन कौशल वैसे ही विकसित होता है जैसे बच्चे बड़े होते रहते हैं। बच्चों की बढ़ती आयु के साथ उन्हें लेखन के उच्च प्रकार (निबन्ध, पत्र, कविता) से परिचित करवाना चाहिए। इनमें से प्रत्येक के लिये एक जैसी किन्तु विशिष्ट (खास तरह की) योग्यताओं की आवश्यकता होती है, जिसके सम्बन्ध में अध्यापक को जागरूक होना चाहिए।

6.10 संदर्भ ग्रंथ/कुछ उपयोगी पुस्तकें

Trask, R.L. (1995). *Language the Basics*. London: Routledge

Kroll, Barbara (2003). *Exploring the Dynamics of Second Language Writing*. London: Cambridge University Press.

Yule, George (1985). *The Study of Language*. London: Cambridge University Press.

6.9 अंत्य इकाई अभ्यास

1. लिखना सीखने की शुरुआत में परिचालन कौशल प्राप्त करना क्यों आवश्यक है?
2. 'स्कूल आने से पहले बच्चों में एक विशेष लिखने की क्षमता होती है।' अपने आसपास किसी 4–5 साल के बच्चे का अवलोकन कीजिए और इस बात को स्पश्ट कीजिए।
3. बोलने की भाषा जल्दी बदलती है जबकि लिखित भाषा धीरे–धीरे बदलती है। उदाहरण देते हुए स्पष्ट कीजिए।
4. लिखने में सरलता, स्पष्टता व संक्षिप्तता का क्या महत्त्व है? स्पष्ट कीजिए।
5. लिखित और बोलने वाली भाषा के अन्तरों का विश्लेषण कीजिए।
6. क्या लिखावट के आधार पर किसी के व्यक्तित्व के बारे में जाना जा सकता है? यदि हाँ तो क्या–क्या?
7. डिस्लेक्सिया से पीड़ित बच्चे को लिखने में क्या समस्याएँ आती हैं?
8. वाक्यों का उपयोग करते हुए ऐसी गतिविधि तैयार कीजिए जिसमें बच्चों को संदर्भात्मक तरीके से काल, लिंग आदि का परिचय करवाया जा सके।
9. कहानी व कविता लेखन का भाषा सिखाने में क्या महत्त्व है?

प्रदत कार्य (Assignment)

- बच्चों में परिचालन कुशलता को विकसित करने के लिए की जा सकने वाली गतिविधियों पर विचार कीजिए। उन गतिविधियों के बारे में भी सोचें जो बच्चों को अधिक संप्रेषणशील बना सकती हैं। इसे प्राप्त करने के लिए विभिन्न प्रकार की सामग्रियों का उपयोग किस प्रकार किया जा सकता है।